राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय
दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण सोमवार 14 सितंबर 2026 वर्ष-9,अंक-223 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

ब्रिटिश प्रभाव से मुक्त होगा भारत का इतिहास

अमित शाह ने मुंबई में कहा- अपनी स्मृति, इतिहास और संस्कृति को बचाने वाला राष्ट्र सदियों की गुलामी के बावजूद पराजित नहीं हो सकता

मुंबई।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को भारत की स्मृति, इतिहास, संस्कृति और ज्ञान परंपरा को देश की शक्ति का महत्वपूर्ण आधार बताया। मुंबई की एशियाटिक सोसाइटी में 'गणेश ज्ञानार्थी' विशेष पांडुलिपि प्रदर्शनी के उद्घाटन के दौरान उन्होंने कहा कि जो राष्ट्र अपनी स्मृति, इतिहास, सांस्कृतिक मूल्यों, भाषा, अभिलेखों और परंपराओं की रक्षा नहीं करता, उसका पतन होने में ज्यादा समय नहीं लगता। अमित शाह ने कहा कि भारत ने सदियों की गुलामी के बावजूद अपनी ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक चेतना को जीवित रखा। इसी वजह से भारत को पूरी तरह पराजित नहीं किया जा सका। उन्होंने कहा कि किसी राष्ट्र की पहचान केवल उसकी वर्तमान उपलब्धियों से नहीं होती, बल्कि उसकी ऐतिहासिक स्मृति और सांस्कृतिक विरासत भी उसकी ताकत होती है। गृह मंत्री ने कहा कि ज्ञान केवल पुस्तकों और संस्थानों में सुरक्षित नहीं रहता। जब ज्ञान समाज की सामूहिक चेतना, स्मृति और मौखिक परंपरा का हिस्सा बन जाता है तो उसे नष्ट करना मुश्किल होता है। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का उदाहरण देते हुए कहा कि पुस्तकालय को जलाया जा सकता है, लेकिन वहां का ज्ञान लोगों की सामूहिक चेतना में मौजूद रहने पर समाप्त नहीं किया जा सकता। पांडुलिपि संरक्षण प्रयोगशाला का निरीक्षण अमित शाह ने एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय का दौरा किया और पांडुलिपि संरक्षण प्रयोगशाला के कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा को नष्ट करने के प्रयासों के बावजूद यह ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ता रहा। गृह मंत्री तीन दिवसीय मुंबई दौरे पर हैं। इस दौरान वह बांद्रा में रत्न एवं आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद के पुरस्कार समारोह और नवी मुंबई के वाशी स्थित सिडको प्रदर्शनी केंद्र में आयोजित छठे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भी शामिल होंगे। वह लालबागचा राजा के दर्शन भी करेंगे।

मातृभाषा को प्राथमिकता देना हमारी सरकार की नीति, विवादों का समाधान राज्य नेतृत्व करेगा- अमित शाह

मुंबई।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि मातृभाषा को प्राथमिकता देना केंद्र सरकार की नीति का हिस्सा है और मातृभाषा को लेकर किसी बड़े संघर्ष की स्थिति पैदा होगी, ऐसा उन्हें नहीं लगता। उन्होंने कहा कि राज्यों के पास अनुभवी नेतृत्व है और स्थानीय स्तर पर उठने वाले विवादों का उचित समाधान निकालने में राज्य नेतृत्व पूरी तरह सक्षम है। कुछ लोग जानबूझकर विवाद को भड़काने या उसे बढ़ाने का प्रयास करते हैं, लेकिन ऐसे मामलों में राज्य नेतृत्व उचित रास्ता निकाल सकता है। मुंबई में आयोजित पत्रकार परिषद में अमित शाह ने कहा कि 2014 से पहले देश भ्रष्टाचार, परिवारवाद और जातिवाद जैसी समस्याओं से जूझ रहा था, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले वर्षों में देश ने इन चुनौतियों से बाहर निकलते हुए विकास की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाया है। अमित शाह ने केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं और विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए दावा किया कि पिछले कुछ वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं और करीब 16 करोड़ लोगों को अपना घर मिला है। उन्होंने कहा कि किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत आर्थिक सहायता दी जा रही है, जबकि उज्ज्वला योजना के माध्यम से करोड़ों परिवारों को गैस कनेक्शन उपलब्ध कराए गए हैं। उन्होंने बिजली कनेक्शन, सड़क और रेलवे के विस्तार का भी उल्लेख किया। शाह के मुताबिक, देश में बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे का विकास हुआ है। उन्होंने दावा किया कि केंद्र सरकार के प्रयासों से नक्सलवाद पर भी प्रभावी ढंग से अंकुश लगाया गया है।

रेलवे स्टेशन से चोरी के दो आरोपी गिरफ्तार

-शिकायतकर्ता के बैग में थे दो लाख रुपये और चांदी की अंगूठियां

नई दिल्ली।

दिल्ली पुलिस ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर चोरी के मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के कब्जे से कथित तौर पर 1.51 लाख रुपये बरामद किए गए हैं। पुलिस के अनुसार शिकायतकर्ता ने तीन सितंबर को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन थाने में बैग चोरी होने की शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायतकर्ता के बैग में करीब दो लाख रुपये नकद, चांदी की अंगूठियां और अन्य सामान था। पुलिस ने मामले की जांच के दौरान रेलवे स्टेशन और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली। इसमें एक संदिग्ध व्यक्ति चोरी का बैग ले जाते हुए दिखाई दिया। फुटेज और लगातार की गई जांच के आधार पर पुलिस ने अश्विनी कुमार (33) और दिलीप राठौर (36) को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के टैक्सी स्टैंड से पकड़ लिया। पुलिस के मुताबिक, अश्विनी कुमार के खिलाफ उत्तर प्रदेश में लूट और चोरी से जुड़े आठ मामले पहले से दर्ज हैं। पुलिस अब चोरी किए गए बाकी सामान की बरामदगी के लिए जांच कर रही है।

पीएम मोदी ने ब्रिक्स में विभिन्न वर्गों की भागीदारी बढ़ाने का किया आह्वान

समिट के दूसरे दिन बोले- सहयोग सिर्फ सरकारों तक सीमित न रहे, किसान, उद्यमी, रिसर्चर, महिलाएं और युवा भी सक्रिय रूप से जुड़ें

नई दिल्ली।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दूसरे दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समूह में सरकारों के साथ समाज के विभिन्न वर्गों की भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत ने ब्रिक्स के मंच के जरिए दोस्ती, साझेदारी और सहयोग की भावना को आगे बढ़ाया है। अब यह सुनिश्चित करने की कोशिश होनी चाहिए कि ब्रिक्स का सहयोग केवल सरकारों तक सीमित न रहे।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि समूह के कामकाज में उद्यमियों, किसानों, शोधकर्ताओं, महिलाओं, युवाओं और आम नागरिकों को भी सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि व्यापक जनभागीदारी से ब्रिक्स सहयोग को और मजबूत किया जा सकता है। इससे पहले शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शामिल नेताओं, विभिन्न देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों के लिए विशेष डिनर का आयोजन किया था। हालांकि, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग इसमें शामिल नहीं हुए। मामले की जानकारी रखने वाले सूत्रों के मुताबिक, शी जिनपिंग समिट में हिस्सा लेने के बाद आराम करने के लिए होटल लौट गए थे। उनके डिनर में शामिल नहीं होने की वजह की आधिकारिक तौर पर पुष्टि नहीं हुई है। अबू धाबी के क्राउन प्रिंस शेख खालिद बिन मोहम्मद भी डिनर में शामिल नहीं हुए। वह दिन में ब्रिक्स समिट में हिस्सा लेने के बाद अपने देश लौट गए थे।

गौरतलब है कि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग शनिवार दोपहर दिल्ली पहुंचे थे। उन्होंने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय बैठक भी की। करीब सात साल बाद हुई उनकी भारत यात्रा को दोनों देशों के संबंधों के लिहाज से महत्वपूर्ण माना गया। ब्रिक्स सम्मेलन के दूसरे दिन शी जिनपिंग ने प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन सुना और अन्य नेताओं के साथ फैमिली फोटो में भी शामिल हुए। इसके बाद वह ब्रिक्स समिट के कार्यक्रम पूरे कर चीन के लिए रवाना हो गए।

बारिश में गणेश मूर्ति का बिगड़ा संतुलन,चार लोग नीचे दबे

नालासोपारा के यशवंत गौरव इलाके में हादसे से मची अफरा-तफरी; स्थानीय लोगों ने मिलकर मूर्ति उठाई, सभी सुरक्षित

नालासोपारा ।

महाराष्ट्र के नालासोपारा पश्चिम स्थित यशवंत गौरव इलाके में शनिवार शाम गणेश मूर्ति गिरने से अचानक अफरा-तफरी मच गई। हादसा शाम करीब 6 बजे हुआ। इस दौरान गणेश मंडल के चार लोग भारी मूर्ति के नीचे दब गए। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत मौके पर पहुंचकर राहत और बचाव कार्य शुरू किया।

जानकारी के मुताबिक, गणेश मूर्ति को एक कारखाने से गणेश मंडल के पंडाल तक ले जाया जा रहा था। इसी दौरान अचानक बारिश शुरू हो गई। मूर्ति को बारिश से बचाने के लिए कुछ लोग उस पर प्लास्टिक डालने की कोशिश कर रहे थे। इसी दौरान मूर्ति का संतुलन बिगड़ गया और वह अचानक नीचे गिर गई।

मूर्ति के गिरते ही उसके आसपास मौजूद चार लोग उसके नीचे दब गए। घटना का वीडियो भी सोशल मीडिया पर सामने आया है, जिसमें मूर्ति के नीचे कुछ लोग दबे दिखाई दे रहे हैं। हादसा होते ही मौके पर मौजूद लोगों में हड़कंप मच गया और लोग मदद के लिए दौड़ पड़े।

लोगों ने मिलकर उठाई भारी मूर्ति

घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय नागरिकों ने मोर्चा संभाला।

कई लोगों ने मिलकर गणेश मूर्ति को उठाया और उसके नीचे दबे लोगों को बाहर निकाला। राहत की बात यह रही कि हादसे में किसी को गंभीर चोट नहीं आई।

इसके बाद मूर्ति को सुरक्षित तरीके से उठाकर गणेश मंडल के स्थान तक पहुंचाया गया। बताया गया कि हादसे के बावजूद गणेश प्रतिमा को कोई नुकसान नहीं हुआ। मूर्ति को सुरक्षित देखकर मंडल के सदस्यों और स्थानीय लोगों ने राहत की सांस ली। घटना के बाद इलाके में स्थिति सामान्य हो गई।

अमित शाह ने मुंबई में किया ऐलान, पीएम मोदी के जन्मदिन से देशभर में 'सेवा संकल्प अभियान'

मुंबई।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर देशभर में एक महीने तक चलने वाले 'सेवा संकल्प अभियान' की घोषणा की है। यह अभियान 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक आयोजित किया जाएगा। अभियान के दौरान देशभर में सेवा और जनकल्याण से जुड़े विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। अमित शाह ने मुंबई दौरे के दौरान आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में इसकी जानकारी दी। इस दौरान महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी मौजूद रहे। अमित शाह ने बताया कि 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत 12 अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इनमें रक्तदान शिविर, आभार प्रदर्शन, नमो सेवा, संगीत एवं नाट्य प्रस्तुतियां, आंगनवाड़ी सेवा और सेवा ज्योति कलश यात्रा प्रमुख हैं। इसके अलावा वडनगर से वाराणसी और वाराणसी से वडनगर यात्रा, सेवा सेतु अभियान तथा ब्लॉक और तालुका स्तर तक सरकारी योजनाओं एवं सेवाओं को पहुंचाने के लिए विशेष अभियान चलाया जाएगा।

पांच राज्यों में आपराधिक मामलों वाले 1405 उम्मीदवारों को टिकट बांटे गए

- रिपोर्ट में खुलासा, राजनीतिक पार्टियों ने दागियों को टिकट देने की वजह नहीं बताई

नई दिल्ली।

एसोसिएशन फॉम डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की रिपोर्ट में कहा गया है कि पांच राज्यों में आपराधिक मामलों वाले 1405 उम्मीदवारों को टिकट दिए गए। ये राज्य असम, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और पुडुचेरी हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि पार्टियों ने आपराधिक रिकॉर्ड वाले 176 उम्मीदवारों को टिकट देने की वजह नहीं बताई। एडीआर ने 51 पार्टियों के 3,539 उम्मीदवारों के रिकॉर्ड की जांच की। इनमें 1,405 उम्मीदवारों ने अपने हलफनामे में अपराधिक मामले घोषित किए थे। इनमें से 1,229 प्रत्याशियों के लिए पार्टियों ने सी-7 फॉर्म में जानकारी दी, जबकि 176 ने जानकारी नहीं दी। रिपोर्ट के मुताबिक पांचों राज्यों में तमिलनाडु में सबसे ज्यादा 72 उम्मीदवारों के सी-7 खुलासे नहीं मिले। एडीआर ने यहां 1,162 उम्मीदवारों का रिकॉर्ड देखा, जिनमें 473 ने आपराधिक मामले घोषित किए थे। इसके बाद पश्चिम बंगाल में 55, केरल में 27, पुडुचेरी में 12 और असम में 10 उम्मीदवारों की सी-7 जानकारी उपलब्ध नहीं थी। पुडुचेरी में 112

उम्मीदवारों में से 39 ने आपराधिक मामले घोषित किए थे। इनमें सिर्फ 12 उम्मीदवारों के टिकट देने का कारण उपलब्ध था। एडीआर ने सिर्फ सी-7 जानकारी गायब होने पर ही सवाल नहीं उठाए, बल्कि पार्टियों की ओर से दिए गए कारणों की गुणवत्ता पर भी सवाल उठाए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक कई उम्मीदवारों के लिए लोकप्रियता, सामाजिक कार्य, अनुभव, योग्यता और अच्छी छवि जैसे एक ही तरह के कारण बताए गए।

धारापुरम उपचुनाव में उतरेगा 'टोडी मूवमेंट', ताड़ी से प्रतिबंध हटाने की मांग

चेन्नई।

तमिलनाडु में 'टोडी मूवमेंट' ने धारापुरम विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में अपना उम्मीदवार उतारने का ऐलान किया है। संगठन के समन्वयक सी. नल्लासामी ने रविवार को कहा कि चुनाव के जरिए कावेरी जल अधिकारों की बहाली और टोडी पर लगी पाबंदी हटाने की मांग को आगे बढ़ाया जाएगा। नल्लासामी ने कहा कि संगठन पूरे विधानसभा क्षेत्र में जमीनी स्तर पर अभियान चलाएगा और ऐसे उम्मीदवार को मैदान में उतारेगा जो कावेरी जल अधिकारों की बहाली और टोडी को कानूनी मान्यता देने की नीतियों का समर्थन करता हो। नल्लासामी ने टोडी पर दशकों से जारी प्रतिबंध को चुनौती देते हुए कहा कि यदि कोई यह साबित कर दे कि प्रतिबंध सही है तो वह 10 करोड़ रुपये का नकद इनाम देंगे। उन्होंने विधायकों पर भी निशाना साधते हुए कहा कि वे सुविधाओं और गाड़ियों की मांग करते रहते हैं। यदि कोई विधायक टोडी पर प्रतिबंध को सही साबित कर दे तो उसे इनोवा कार देने की बात भी कही। उन्होंने न्यायमूर्ति बी. गोकुलदास आयोग की रिपोर्ट का हवाला देते हुए दावा किया कि आयोग ने टोडी पर प्रतिबंध को लेकर सवाल उठाए थे। यह आयोग कल्लाकुरिची में अवैध शराब त्रासदी की जांच के लिए गठित किया गया था।

आतंकवाद से लेकर वैश्विक सुधार तक ब्रिक्स देशों का साझा रुख

ब्रिक्स घोषणापत्र में भारत की कूटनीतिक जीत

नई दिल्ली।

यहां आयोजित 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में नई दिल्ली घोषणापत्र जारी किया गया, जिसने आतंकवाद, वैश्विक शासन सुधार और मध्य-पूर्व संकट जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर सदस्य देशों का साझा रुख प्रस्तुत किया। इस घोषणापत्र को भारत की कूटनीतिक सफलता के रूप में देखा जा रहा है, खासकर तब जब विभिन्न वैश्विक चुनौतियों पर साझा सहमति बनाना कठिन माना जा रहा था।घोषणापत्र में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में अप्रैल 2025 को हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की गई, जिसमें 26 नागरिकों की मौत हुई थी। ब्रिक्स ने देश-समर्थित सीमा पार आतंकवाद, इसकी फंडिंग और आतंकियों के सुरक्षित ठिकानों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर जोर दिया।

चीन और रूस जैसे देशों की मौजूदगी में किसी विशिष्ट आतंकी घटना का नाम शामिल करना और सीमा पार आतंकवाद पर सीधा रुख अपनाना भारत के लिए एक बड़ी कूटनीतिक जीत मानी जा रही है, जो आतंकवाद के मुद्दे पर दोहरे मानदंडों को अस्वीकार करता है।संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में सुधार की मांग को दोहराते हुए ब्रिक्स देशों ने इसे अधिक लोकतांत्रिक, प्रतिनिधि और प्रभावी बनाने पर जोर दिया। चीन और रूस ने विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र में भारत और ब्राजील की बड़ी भूमिका और आकांक्षाओं के प्रति अपने समर्थन को दोहराया। चीन का पहले यूएनएससी में भारत की स्थायी सदस्यता का विरोध करना और अब इस पर सहमति जताना, भारत की दीर्घकालिक कोशिशों को रणनीतिक बल प्रदान करता है। गाजा संकट पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए घोषणापत्र में बिना बाधा मानवीय सहायता पहुंचाने और स्थायी युद्धविराम की मांग की गई। घोषणापत्र में एकतरफा टैरिफ,

व्यापार बाधाओं और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की मंजूरी के बिना लगाए जाने वाले आर्थिक प्रतिबंधों का विरोध किया गया। यूरोपीय संघ के कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म जैसे ग्रीन-टैक्स उपायों को संरक्षणवाद करार दिया गया। इसके अतिरिक्त, ब्रिक्स ने विश्व व्यापार संगठन में तत्काल सुधार और उसके ठप पड़े विवाद निपटान तंत्र की बहाली की मांग की, जो नियम-आधारित वैश्विक व्यापार व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। सदस्य देशों ने आपस में स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने और भुगतान प्रणालियों के बीच इंटर-कनेक्शन विकसित करने पर सहमति जताई, जिससे अमेरिकी डॉलर पर वैश्विक निर्भरता कम होगी। भारत के गुजरात स्थित गिफ्ट सिटी आईएफएससी में ब्रिक्स रिस्क लैब स्थापित करने के प्रस्ताव का स्वागत किया गया, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) शासन पर भारत की पहल एआई इंपैक्ट समिट की सराहना की गई।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भगवान गणेश : मंगल, समृद्धि और विकसित भारत के प्रेरणास्रोत

गणेशजी का सबसे बड़ा संदेश है—शुभारंभ करो, लेकिन विवेक के साथ। किसी भी कार्य के पहले गणेशजी का स्मरण इस बात का प्रतीक है कि सफलता केवल गति से नहीं, सही दिशा से मिलती है। विकसित भारत का निर्माण भी केवल बड़े आर्थिक आंकड़ों, आधुनिक शहरों, नई तकनीक और विशाल परियोजनाओं से नहीं होगा। इसके लिए ऐसी विकास-दृष्टि चाहिए जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ मानवीय संवेदना, नैतिकता, पर्यावरण-संतुलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक न्याय का समन्वय हो। गणेशजी का स्मरण हमें बताता है कि विकास का पहला कदम बाहर नहीं, भीतर उठता है—विचारों की शुद्धता और संकल्प की दृढ़ता से।

(लेखक- ललित गर्ग)

गणेशजी के व्यक्तित्व में छिपे प्रबंधन, नेतृत्व, ज्ञान, अनुशासन और समावेशी विकास के सूत्रों को आत्मसात कर भारत 2047 के संकल्प को नई दिशा दी जा सकती है

भगवान श्री गणेश भारतीय संस्कृति के ऐसे बहुआयामी एवं सर्वस्वीकार्य देवता हैं, जिनका स्मरण किसी भी शुभ कार्य के प्रारंभ में किया जाता है। वे केवल विघ्नहर्ता और मंगलकर्ता के रूप में पूजित नहीं हैं, बल्कि उनका संपूर्ण व्यक्तित्व ज्ञान, विवेक, दूरदर्शिता, नेतृत्व, धैर्य, आत्मसंयम, संवाद, समावेशिता और कर्मशीलता का अद्भुत संदेश देता है। आज जब भारत विकसित भारत 2047 के संकल्प के साथ आर्थिक शक्ति, तकनीकी क्षमता, सामाजिक समरसता और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब गणेशजी के प्रतीकात्मक व्यक्तित्व को केवल पूजा तक सीमित रखने के बजाय उनके जीवन-संदेश को राष्ट्रीय चरित्र और विकास-दृष्टि का आधार बनाना समय की बड़ी आवश्यकता है। गणेश चतुर्थी केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और राष्ट्रनिर्माण की प्रेरणा का पर्व बन सकती है।

गणेशजी का सबसे बड़ा संदेश है—शुभारंभ करो, लेकिन विवेक के साथ। किसी भी कार्य के पहले गणेशजी का स्मरण इस बात का प्रतीक है कि सफलता केवल गति से नहीं, सही दिशा से मिलती है। विकसित भारत का निर्माण भी केवल बड़े आर्थिक आंकड़ों, आधुनिक शहरों, नई तकनीक और विशाल परियोजनाओं से नहीं होगा। इसके लिए ऐसी विकास-दृष्टि चाहिए जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ मानवीय संवेदना, नैतिकता, पर्यावरण-संतुलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक न्याय का समन्वय हो। गणेशजी का स्मरण हमें बताता है कि विकास का पहला कदम बाहर नहीं, भीतर उठता है—विचारों की शुद्धता और संकल्प की दृढ़ता से।

गणेशजी का गजमुख उनकी सबसे विशिष्ट पहचान है। हाथी भारतीय मानस में बुद्धि, स्मृति, धैर्य और शक्ति का प्रतीक रहा है। बड़ा मस्तक हमें बड़ा सोचने की प्रेरणा देता है। आज भारत को भी सीमित सोच से बाहर निकलकर वैश्विक चुनौतियों के अनुरूप दीर्घकालीन और व्यापक दृष्टि विकसित करनी होगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष विज्ञान, डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित ऊर्जा, जैव-प्रौद्योगिकी और नई औद्योगिक क्रांति के युग में वही राष्ट्र आगे बढ़ेगा जो ज्ञान को अपनी सबसे बड़ी शक्ति बनाएगा। गणेशजी का मस्तक मानो संदेश देता है—ज्ञान जितना व्यापक होगा, विकास उतना ही दूरगामी होगा।

उनके बड़े कान लोकतांत्रिक नेतृत्व की अनूठी सीख देते हैं। अच्छा नेतृत्व वह नहीं जो केवल बोलता है, बल्कि वह है जो सुनता है। जनता की आकांक्षाओं, युवाओं के सपनों, किसानों की समस्याओं, श्रमिकों की चुनौतियों, महिलाओं की अपेक्षाओं और वंचित वर्गों की आवाज को सुनना ही संवेदनशील शासन की पहचान है। भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बने, इसके लिए विकास का मॉडल जनभागीदारी पर आधारित होना चाहिए। गणेशजी के बड़े कान हमें सिखाते हैं कि जनता की आवाज सुनना ही सुशासन की पहली शर्त है।

उनकी छोटी आंखें एकाग्रता और सूक्ष्म दृष्टि का प्रतीक मानी जाती हैं। आज सूचना और विकल्पों की अधिकता के दौर में ध्यान भटकना आसान है। राष्ट्र के सामने भी अनेक चुनौतियां हैं। इसलिए लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए और ऊर्जा अनावश्यक विवादों में नहीं, राष्ट्र के निर्माण में लगनी चाहिए। विकसित भारत का लक्ष्य तभी सार्थक होगा जब व्यक्ति से लेकर शासन तक प्राथमिकताओं की स्पष्टता, कार्य में एकाग्रता और परिणाम के प्रति प्रतिबद्धता हो।

गणेशजी की सूंड अत्यंत संवेदनशील होने के साथ शक्तिशाली भी है। वह सूक्ष्म वस्तु को भी संभाल सकती है और भारी कार्य भी कर सकती है। यह क्षमता हमें परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की प्रेरणा देती है। आज के भारत को भी यही लचीलापन चाहिए। तकनीक बदल रही है, रोजगार के स्वरूप बदल रहे हैं, वैश्विक अर्थव्यवस्था बदल रही है और पर्यावरणीय चुनौतियां बढ़ रही हैं। जो समाज परिवर्तन को समझकर अपनी क्षमता विकसित करेगा, वही भविष्य का नेतृत्व करेगा।

गणेशजी का लंबोदर भी गहरा जीवन-संदेश देता है। इसे विशाल हृदय, सहनशीलता और जीवन की विविधताओं को आत्मसात करने की क्षमता का प्रतीक माना जा सकता है। राष्ट्रनिर्माण में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन मनभेद विनाशकारी हो सकते हैं। भारत की शक्ति उसकी विविधता में है। भाषा, संस्कृति, परंपरा, विचार और जीवन-पद्धति की विविधता को संघर्ष का कारण नहीं, राष्ट्रीय शक्ति का आधार बनाना होगा। गणेशजी का व्यक्तित्व हमें समावेशी भारत की प्रेरणा देता है—ऐसा भारत जिसमें विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे और कोई स्वयं को राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग महसूस न करे।

गणेशजी का वाहन मूषक भी अत्यंत अर्थपूर्ण प्रतीक है। विशालकाय गजानन का वाहन एक छोटा-सा मूषक है। यह मानो अहंकार पर नियंत्रण और छोटे से छोटे तत्व के महत्व को स्वीकार करने का संदेश देता है। आधुनिक भारत में बड़ी अर्थव्यवस्थाओं और बड़ी परियोजनाओं के साथ छोटे उद्यमी, कारीगर, किसान, स्टार्टअप, स्थानीय व्यवसाय और सामान्य नागरिक भी विकास की धुरी हैं। विकसित भारत का अर्थ केवल बड़े भारत से नहीं, बल्कि हर व्यक्ति को अवसर देने वाले भारत से है।

गणेशजी की चार भुजाएं कर्म, ज्ञान, विवेक और संतुलन के समन्वय का संदेश देती हैं। आज भारत को ज्ञान और कौशल से संपन्न युवा चाहिए, उद्यमशील नागरिक चाहिए और ऐसे संस्थान चाहिए जो नवाचार को प्रोत्साहित करें। केवल डिग्री नहीं, उपयोगी ज्ञान; केवल नौकरी नहीं, रोजगार सृजन; केवल उपभोग नहीं, उत्पादन—यही विकसित भारत की आधारभूमि बन सकती है।गणेशजी को विघ्नहर्ता कहा जाता है, लेकिन विघ्नों को समाप्त करने का वास्तविक अर्थ समस्याओं से पलायन नहीं, बल्कि उनका साहसपूर्वक सामना करना है। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, प्रदूषण और अंधविश्वास जैसे राष्ट्रीय विघ्न केवल कानूनों से नहीं, सामूहिक चेतना और नागरिक जिम्मेदारी से दूर होंगे। गणेशजी का साहस हमें बताता है कि कठिनाई जितनी बड़ी हो, संकल्प उससे बड़ा होना चाहिए।

ऋद्धि और सिद्धि का गणेशजी से जुड़ाव भी विकास की व्यापक अवधारणा को स्पष्ट करता है। केवल धन-संपदा ऋद्धि नहीं और केवल उपलब्धि सिद्धि नहीं; दोनों का संतुलन आवश्यक है। भारत की आर्थिक समृद्धि के साथ ज्ञान, संस्कार, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की सिद्धि भी होनी चाहिए। तभी समृद्धि स्थायी और सार्थक बनेगी। शुभ और लाभ का संदेश भी यही है कि उपलब्धि तभी शुभ है जब वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के व्यापक हित में हो।

गणेशजी को प्रथम पूज्य और बुद्धि के देवता के रूप में स्मरण करने की भारतीय परंपरा आज के भारत के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। जब देश 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है, तब आवश्यकता केवल सरकारों के प्रयासों की नहीं, बल्कि विकसित सोच वाले नागरिकों की है। प्रत्येक भारतीय अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी, उत्कृष्टता, नवाचार, अनुशासन और राष्ट्रहित को प्राथमिकता दे, तो विकास का लक्ष्य जनआंदोलन बन सकता है।

गणेश चतुर्थी इसलिए हमें केवल प्रतिमा स्थापित करने और उत्सव मनाने का अवसर न दे, बल्कि अपने भीतर गणेशत्व जगाने का संकल्प दे। बुद्धि में विशालता हो, दृष्टि में दूरदर्शिता हो, कानों में संवेदनशीलता हो, वाणी में मधुरता हो, कर्म में शक्ति हो, मन में धैर्य हो और व्यवहार में समावेशिता हो—यही गणेशजी की वास्तविक आराधना है। जब भारत का नागरिक अपने भीतर के विघ्नों—अज्ञान, आलस्य, अहंकार, स्वार्थ और संकीर्णता—पर विजय प्राप्त करेगा, तभी विकसित भारत का सपना साकार होगा।

भगवान गणेश का संदेश अंततः यही है कि मंगल बाहर से नहीं आता, उसे अपने विचार, व्यवहार और कर्म से निर्मित करना पड़ता है। यदि गणेशजी की बुद्धि, विवेक, धैर्य, साहस, श्रवणशीलता, आत्मसंयम और समावेशी दृष्टि को राष्ट्रीय जीवन का हिस्सा बनाया जाए, तो भारत केवल आर्थिक रूप से विकसित राष्ट्र नहीं, बल्कि समृद्ध, संस्कारित, संवेदनशील, आत्मनिर्भर और विश्व को दिशा देने वाला आदर्श राष्ट्र बन सकता है। यही गणेश चतुर्थी की सबसे बड़ी राष्ट्रीय साधना और विकसित भारत 2047 के संकल्प की सार्थक परिणति होगी।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

संपादकीय

सहयोग का घोषणापत्र

भारत ने ब्रिक्स के नई दिल्ली घोषणापत्र पर सदस्य देशों, विशेषकर ईरान, सऊदी अरब और यूएई के बीच मतभेदों के बावजूद सहमति बनाकर अपनी कूटनीतिक कुशलता का प्रदर्शन किया ब्रिक्स के नई दिल्ली घोषणापत्र पर सहमति बनना इसलिए एक उपलब्धि और भारत का कूटनीतिक कद बढ़ाने वाली है, क्योंकि यह माना जा रहा था कि सदस्य देशों और विशेष रूप से ईरान और सऊदी अरब एवं यूएई में मतभेदों के कारण ऐसा होना कठिन है। इसके बाद भी भारत सभी देशों को साथ लाने में सफल रहा। इसके पहले भारत अपनी अध्यक्षता वाले जी-20 शिखर सम्मेलन में भी सभी देशों के बीच सहमति बनाने में सफल रहा था, जबकि यूक्रेन युद्ध के कारण अमेरिका और यूरोप के देश रूस के विरुद्ध तीखे तेवर अपनाए हुए थे। यह सही है कि साझा घोषणापत्र में पश्चिम एशिया संकट को लेकर जो कुछ कहा गया, उसमें किसी देश का नाम नहीं लिया गया, लेकिन यह सामान्य बात नहीं कि अमेरिकी हमलों के जवाब में जो ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात पर मिसाइलें दागता रहता है, वह भी साझा बयान जारी करने के लिए सहमत हुआ। इतना ही नहीं, ब्रिक्स सम्मेलन के चलते ईरान और यूएई के प्रतिनिधियों ने आपस में बात भी की। कुल मिलाकर भारत ने यह दिखाया कि उसमें एक दूसरे के खिलाफ खड़े देशों के बीच भी सहमति बनाने का कूटनीतिक कौशल है। अपने इस कूटनीतिक कौशल के कारण ही भारत क्वाड का सदस्य है तो ब्रिक्स और एससीओ का भी। यह स्थिति भारत को विशिष्ट बनाती है और विश्व का ध्यान उसकी ओर खींचती है।ब्रिक्स सम्मेलन में बनी सहमति इसका परिचायक है कि भारत सदस्य देशों के बीच यह भाव जगाने में सफल रहा कि विफल होते संयुक्त राष्ट्र के कारण यदि इस संगठन को सशक्त बनाना है तो उन्हें मतभेदों को किनारे कर आपसी सहयोग पर जोर देते हुए एकजुट होना होगा। अच्छा होगा कि इस संगठन के सदस्य और सहयोगी देश यह समझें कि आपसी सहमति केवल कागज तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। नई दिल्ली घोषणापत्र पर केवल ईरान, सऊदी अरब और यूएई को ही ध्यान नहीं देना होगा, बल्कि चीन को भी ऐसा ही करना होगा, क्योंकि इसमें पहलगाम हमले का उल्लेख करते हुए आतंकवाद पर दोहरा मानदंड अपनाने की प्रवृत्ति को रेखांकित किया गया है। यह किसी से छिपा नहीं कि चीन इस प्रवृत्ति का प्रदर्शन करता रहा है। घोषणापत्र की इन बातों पर चीन के साथ रूस को भी गौर करना होगा कि हर देश की संप्रभुता का सम्मान किया जाना चाहिए। यदि ब्रिक्स देश अपने घोषणापत्र के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता नहीं दिखाते तो फिर अन्य देशों और संगठनों से यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि वे अंतरराष्ट्रीय नियमों का पालन करें। वास्तव में ब्रिक्स को यह आत्मसात करने की सख्त जरूरत है कि घोषणापत्र पर सहमति बनाने से कहीं अधिक आवश्यक उसके अनुरूप कार्य करना है। इससे ही ब्रिक्स अपने उद्देश्यों में सफल होगा और पश्चिमी देशों के प्रभुत्व वाली विश्व व्यवस्था का विकल्प बन सकेगा।

संस्कृति, संवाद और आत्मगौरव का उत्सव है हिन्दी दिवस

(लेखक- योगेश कुमार गोयल)

(हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) पर विशेष)

हर वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाने वाला हिन्दी दिवस उस गौरव की स्मृति के रूप में मनाया जाता है, जब हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया गया था। यह दिवस हिन्दी की समृद्धि, स्वीकार्यता, रचनात्मकता और वैश्विक विस्तार का उत्सव है। निरंतर बढ़ती हिन्दी शक्ति आज न केवल भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रशासनिक परिदृश्य को आकार देती है बल्कि विश्व मंच पर भी अपनी प्रगाढ़ छाप छोड़ रही है। आज दुनियाभर में हिन्दी चाहने वालों, बोलने या पढ़ने-समझने वाले लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। हिन्दी को लेकर भारतीय और विदेशी विद्वानों, साहित्यकारों तथा विभूतियों का आदर भाव वर्षों से रहा है।

डा. फादर कामिल बुल्के, जिन्होंने हिन्दुस्तानी संस्कृति को आत्मसात किया, हिन्दी को गृहिणी की संज्ञा देते हुए कहा था कि यह भारतीय जीवन का अभिन्न हिस्सा है। संस्कृत को तो वे मां मानते थे और अंग्रेजी को नौकरानी। इसी तरह आयरिश प्रशासक जॉन ग्रियर्सन ने हिन्दी को संस्कृत की बेटियों में सबसे सुंदर और शिरोमणि बताया। ऐसे तमाम उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि हिन्दी, शब्द और विचार के धरातल पर विभिन्न भाषाओं से जितनी आत्मीयता रखती है, उतनी ही भारत के जनमानस से जुड़ी है लेकिन दुखद है कि आज भी पुनरुत्थानवादी मानसिकता वाले कुछ लोग हिन्दी की व्यापकता, समृद्धि और ताकत को नजरअंदाज करते हैं और संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को स्थान नहीं मिलने की बात पर कुतर्क करके उसके वैश्विक पक्ष को कमतर आंकते हैं। हालांकि ऐसी नकारात्मक चर्चाओं से न हिन्दी का कुछ भला हो सकता है, न ही उसका अस्तित्व डिग सकता है। तथ्य यही है कि आज विश्वभर में हिन्दी बोलने वालों का आंकड़ा करोड़ों में है और यह निरंतर बढ़ रहा है।

हिन्दी की ताकत को जानना हो तो उसके सांस्कृतिक, भावनात्मक और रचनात्मक विस्तार को देखना होगा। मातृभाषा का ज्ञान किसी भी व्यक्ति के मन की पीड़ा का सबसे अच्छा समाधान है। महापुरुषों, विद्वानों और नेताओं ने समय-समय पर हिन्दी भाषा के महत्व को रेखांकित किया है। पुरुषोत्तमदास टंडन मानते थे कि जीवन के हर क्षेत्र में हिन्दी अपनी भूमिका निभाने में समर्थ है। महात्मा गांधी ने हिन्दी को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संवाद व जनसंपर्क का सबसे शक्तिशाली माध्यम माना। उनके शब्द थे कि सम्पूर्ण भारत की पारस्परिकता के लिए ऐसी भाषा चाहिए, जो जनता का बड़ा भाग जानता-समझता हो। गांधीजी कहते थे, 'दिल की कोई भाषा नहीं है, दिल से दिल संवाद करता है और राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।' ये कथन आज भी वैसी ही सार्थकता के साथ जीवंत हैं। अमेरिकी चिकित्सक वॉल्टर चेनिंग तो यह मानते थे कि विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र की शिक्षा एवं प्रशासन की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है। माखनलाल चतुर्वेदी और राहुल सांस्कृत्यायन ने हिन्दी को देश और भाषा की विरासत, सांस्कृतिक धरातल और अधिष्ठान के रूप में देखा। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने तो यहां तक कहा कि राष्ट्रीय एकता का बंधन केवल हिन्दी ही जोड़ सकती है। हिन्दी की ऊर्जा और आत्मबल का उदाहरण महात्मा गांधी के हिन्दी प्रेम का एक प्रसंग भी है। सन् 1917 में कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में बाल गंगाधर तिलक ने अंग्रेजी में भाषण दिया था। गांधीजी ने तिलक को स्पष्ट समझाया कि देशवासियों के साथ अपनी ही भाषा में संवाद ही सही अर्थों में दिलों तक पहुंच सकता है। यह भावप्रवण संवाद भारत के हर नागरिक के गौरव का स्रोत है। महात्मा गांधी ने विविध अवसरों पर हिन्दी को राष्ट्र की आत्मा कहा था। आज हिन्दी का विस्तार भारत तक सीमित नहीं रहा। कई देशों में हिन्दी लोगों के दिलों में बसती है, जहां की स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी भी संगठित रूप से बोली जाती है। दुनियाभर में सैंकड़ों विश्वविद्यालयों, शैक्षिक संस्थाओं, शोध केंद्रों और अनगिनत प्लेटफॉर्म्स पर हिन्दी पढ़ाई जाती है, शोध होती है और यह वहां अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान की भाषा बन चुकी है। विश्वभर में लगभग 75 करोड़ लोग हिन्दी बोलते समझते हैं और एथ्नोलॉग जैसी अंतर्राष्ट्रीय भाषायी संस्थाओं की रिपोर्ट के मुताबिक, यह विश्वभर में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, जो तेजी से ऊपर की ओर बढ़ रही है।

हिन्दी का वैश्विक सांस्कृतिक प्रभाव भी आश्चर्यचकित करता है। भारतीय फिल्म उद्योग, जिसे दुनियाभर में 'बॉलीवुड' के नाम से जाना जाता है, हर साल करीब 1500 फिल्में हिन्दी में बनाता है। ये फिल्में भारत में ही नहीं, अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, खाड़ी देशों सहित अनेक देशों में देखी जाती हैं। हिन्दी फिल्मों, गीतों, साहित्य और कला का प्रभाव विदेशी मंचों, सांस्कृतिक समारोहों, मीडिया एवं एफएम चैनलों तक फैला हुआ है। यूएई में हिन्दी एफएम चौनल स्थानीय लोगों की खास पसंद बन चुके हैं। हिन्दी फिल्म अभिनेता, निर्माता व कलाकार विदेशों में शो आयोजित करते हैं, जिससे भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा का विस्तार होता है। जहां-जहां भारतवंशी बसे हैं, वहां हिन्दी विशेष सम्मान के साथ जीवंत है। यह यथार्थ हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है।

वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी व्यापार, वाणिज्य, शिक्षा, तकनीकी और प्रशासन के क्षेत्र में निरंतर बढ़ रही है। फेसबुक, गूगल, यूट्यूब जैसी कंपनियों ने हिन्दी को प्राथमिकता देना शुरू कर दिया है। भारत में 80 प्रतिशत मोबाइल उपभोक्ता हिन्दी में सामग्री अपनाते हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिन्दी की उपस्थिति लगातार बढ़ रही है और इसका प्रसार इतनी गति से हो रहा है कि कुछ ही वर्षों में हिन्दी इंटरनेट की प्रमुख भाषा बन सकती है। हिन्दी की संवैधानिक सुरक्षा भारत में संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 के तहत निश्चित है। यह धाराएं हिन्दी के प्रचार-प्रसार, स्वीकार्यता और संरक्षण का मजबूत आधार हैं। यह न केवल भारत की आधिकारिक भाषा है बल्कि सम्पर्क भाषा, प्रशासन और विधि के क्षेत्र में इसका प्रयोग निर्णायक रूप से हो रहा है। भारत के शैक्षिक संस्थानों, सरकारी कार्यालयों और सांस्कृतिक आयोजनों में हिन्दी को सम्मानपूर्वक अपनाया गया है। विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना, हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की मान्यता दिलवाने की पहल और डिजिटल क्षेत्र में हिन्दी सशक्तीकरण, ये सभी कदम हिन्दी के वैश्विक मंच पर सशक्तीकरण की दिशा में उठाए गए हैं।कुल मिलाकर, हिन्दी दिवस केवल एक दिन का उत्सव नहीं, यह हमारी संस्कृति, भाषायी आत्मसम्मान और राष्ट्रीय एकता का दिन है। इस दिन हर भारतीय को यह संकल्प लेना चाहिए कि हिन्दी को रचनात्मक, सुंदर और समृद्ध बनाए रखने में अपना योगदान दे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का सपना केवल राजभाषा का प्रतिष्ठापन नहीं था बल्कि भारत की आत्मा, उसकी विविधता और सांस्कृतिक गौरव की अभिव्यक्ति थी, जिसे हिन्दी ने बखूबी आकार दिया है।

क्या हैं आध्यात्मिक होने का अर्थ

संस्कृति, संवाद और आत्मगौरव का उत्सव है हिन्दी दिवस
(लेखक- योगेश कुमार गोयल/ईएमएस)
(हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) पर विशेष)

हर वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाने वाला हिन्दी दिवस उस गौरव की स्मृति के रूप में मनाया जाता है, जब हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया गया था। यह दिवस हिन्दी की समृद्धि, स्वीकार्यता, रचनात्मकता और वैश्विक विस्तार का उत्सव है। निरंतर बढ़ती हिन्दी शक्ति आज न केवल भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रशासनिक परिदृश्य को आकार देती है बल्कि विश्व मंच पर भी अपनी प्रगाढ़ छाप छोड़ रही है। आज दुनियाभर में हिन्दी चाहने वालों, बोलने या पढ़ने-समझने वाले लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। हिन्दी को लेकर भारतीय और विदेशी विद्वानों, साहित्यकारों तथा विभूतियों का आदर भाव वर्षों से रहा है।

डा. फादर कामिल बुल्के, जिन्होंने हिन्दुस्तानी संस्कृति को आत्मसात किया, हिन्दी को गृहिणी की संज्ञा देते हुए कहा था कि यह भारतीय जीवन का अभिन्न हिस्सा है। संस्कृत को तो वे मां मानते थे और अंग्रेजी को नौकरानी। इसी तरह आयरिश प्रशासक जॉन ग्रियर्सन ने हिन्दी को संस्कृत की बेटियों में सबसे सुंदर और शिरोमणि बताया। ऐसे तमाम उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि हिन्दी, शब्द और विचार के धरातल पर विभिन्न भाषाओं से जितनी आत्मीयता रखती है, उतनी ही भारत के जनमानस से जुड़ी है लेकिन दुखद है कि आज भी पुनरुत्थानवादी मानसिकता वाले कुछ लोग हिन्दी की व्यापकता, समृद्धि और ताकत को नजरअंदाज करते हैं और संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को स्थान नहीं मिलने की बात पर कुतर्क करके उसके वैश्विक पक्ष को कमतर आंकते हैं। हालांकि ऐसी नकारात्मक चर्चाओं से न हिन्दी का कुछ भला हो सकता है, न ही उसका अस्तित्व डिग सकता है। तथ्य यही है कि आज विश्वभर में हिन्दी बोलने वालों का आंकड़ा करोड़ों में है और यह निरंतर बढ़ रहा है।

हिन्दी की ताकत को जानना हो तो उसके सांस्कृतिक, भावनात्मक और रचनात्मक विस्तार को देखना होगा। मातृभाषा का ज्ञान किसी भी व्यक्ति के मन की पीड़ा का सबसे अच्छा समाधान है। महापुरुषों, विद्वानों और नेताओं ने समय-समय पर हिन्दी भाषा के महत्व को रेखांकित किया है। पुरुषोत्तमदास टंडन मानते थे कि जीवन के हर क्षेत्र में हिन्दी अपनी भूमिका निभाने में समर्थ है। महात्मा गांधी ने हिन्दी को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संवाद व जनसंपर्क का सबसे शक्तिशाली माध्यम माना। उनके शब्द थे कि सम्पूर्ण भारत की पारस्परिकता के लिए ऐसी भाषा

टेक्स कानून और नियमों का खेल, कौन बनेगा करपति

(लेखक- सनत जैन)

अमिताभ बच्चन का कौन बनेगा करोड़पति कार्यक्रम सारे देश में लोकप्रियता के चरम पर है। इसमें प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्नों के सही जवाब के आधार पर उन्हें राशि मिलती है, देश भर में ख्याति मिलती है। इस कार्यक्रम में शामिल होने के बाद और उसमें करोड़पति बनने के बाद उसे समाज में जो महत्वपूर्ण स्थान मिलता है, उसकी तुलना करना आसान नहीं है। इसी तर्ज पर टैक्स अधिकारियों का एक क्विज कार्यक्रम शुरू किया गया है। इसका नाम रखा है कौन बनेगा करपति। अप्रैल 2026 से नया आयकर कानून लागू हुआ है। इस कानून में इतने सारे नियम उप नियम है, इतने सारे जुर्माने के प्रावधान है। कानून लागू होने के पहले ही इतने सारे संशोधन हो चुके हैं। उसके हिसाब से आयकर विभाग के अधिकारियों को काम करने में नियमों को समझने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्य के आठ शहरों के आयकर अधिकारियों और आयकर निरीक्षकों को शामिल कर एक क्विज कार्यक्रम चलाया गया। इसके लिए गूगल में रजिस्ट्रेशन हुआ। 550 प्रतिभागी शामिल हुए। प्रतियोगिता में नए इनकम टैक्स एक्ट के नियम और पुराने एक्ट के नियमों को दो भागों में बांटा गया। पहले चरण के परिणाम के आधार पर दोनों श्रेणियां के 30-30 प्रतिभागी चुने गए। अब इनमें 29 सितंबर को फाइनल मुकाबला होगा।

इस क्विज के माध्यम से यह तय किया जाएगा, नए टैक्स कानून के नियम और उप नियम किस तरह से सीखे और समझे जाएं। आयकर विभाग के अधिकारी और निरीक्षक नए और पुराने कानून से अपग्रेड रहें। आयकर दाताओं को परेशानी का सामना ना करना पड़े, वहीं सरकार को ज्यादा से ज्यादा राजस्व मिले। यह एक बानगी है। गांव की भाषा में एक कहावत बड़ी प्रचलित है- लड़का सीखे नाई का, सिर कटे गंवार का। पिछले एक दशक में टैक्स से संबंधित सारे नियम और कानून संसद में मनी बिल एक्ट के तहत पास किए गए हैं। संसद में कानून और नियमों में और उसके उप नियमों में जो प्रावधान होते थे उसे संसद में रखना पड़ता था। सारे फॉर्मेट और जो भी परिवर्तन किया गया है, उसकी जानकारी संसद में रखी जाती थी। उस पर बहस होती थी। जो नियम और कानून बनते थे वह लंबे समय तक लागू रहते थे। लेकिन नोटबंदी के बाद से चाहे जीएसटी का कानून हो, चाहे आयकर के कानून हों, इसी तरह से राजस्व से संबंधित सारे नियम और कानून बदलने की शक्तियां अब मंत्रालय में मंत्रियों और अधिकारियों के पास आ गई है। आए दिन नए-नए सर्कुलर जारी हो जाते हैं। आए दिन नियम कानून और जुर्माने इत्यादि में परिवर्तन कर दिया जाता है। इसका पता अधिकारियों को भी सर्कुलर के जरिए लगता है। इतनी सारी संख्या में परिवर्तन किए गए हैं कि वह अधिकारियों को याद रख पाना संभव ही नहीं है। जिस तरह से टैक्स वसूली में अधिकारियों और सरकार का हस्तक्षेप एक भ्रष्टाचार के रूप में देखने को मिल रहा है, जिसकी मर्जी में जो आता है वह नियम और कानून बना लागू कर देता है। हर सर्कुलर एक दूसरे के विपरीत होने से सरकारी कार्यालयों और मंत्रालय में बैठे अधिकारी मनमाने तरीके से इसका उपयोग करते हैं।

अब स्थिति यह आ गई है, हर जगह अराजकता मची हुई है। टैक्स अधिकारियों को समझ ही नहीं आ रहा है वह किस तरह से अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करें। टैक्स को लेकर लगातार शिकायतें बढ़ती चली जा रहे हैं। मामले ट्रिब्यूनल से लेकर हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट बड़ी संख्या में पहुंच रहे हैं। अब ऐसा लगता है, करदाताओं को चाहे वह छोटा हो या बड़ा यदि उसे भारत में रहना है तो कानून पढ़ना जरूरी है। यदि वह कानून पढ़ भी ले और वह अपनी लड़ाई लड़ना चाहे तो वह उसके भाग्य पर निर्भर करता है। जो अधिकारी इसकी सुनवाई कर रहा है वह कितने नियम कानून को जानता है यदि नहीं जानता है और उसका भाग्य ठीक नहीं है इसका खामियाजा करदाता को ही भुगतना पड़ेगा। हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट और ट्रिब्यूनल सरकार के सामने बेबस हैं। सरकार ने सांसदों और विधायकों के अधिकारों को एक तरह से खत्म कर दिया है। टैक्स संबंधी मामले अब मनी बिल के अंतर्गत लोकसभा, राज्यसभा और राज्य की विधान सभा में धड़ाधड़ पास हो जाते हैं। बाद में प्रशासकीय आदेशों के तहत नए-नए नियम बनाकर लागू कर दिए जाते हैं। अब तो हर विभाग में जो सर्कुलर टैक्स के संबंध में जारी हुए हैं उन्हें याद रख पाना संभव ही नहीं है। कुछ ही समय में सारे नियम बदल जाते हैं। एक अधिकारी आता है उसके अपने अलग नियम होते हैं, दूसरा अधिकारी आता है तो वह अपने नियम लागू कर देता है। ऐसी स्थिति में यही कहा जा सकता है, नियम और कानून अब करदाता के भाग्य पर निर्भर है। सरकारी अधिकारियों की यदि उसके ऊपर कृपादृष्टि है तो उसे नियम कानून का फायदा मिलेगा। हो सकता है टैक्स से भी बचत हो जाए। यदि अधिकारियों की कृपादृष्टि उसके ऊपर नहीं है, ऐसी स्थिति में उसका भगवान ही मालिक है। कौन बनेगा करोड़पति की तर्ज पर जिस तरह कौन बनेगा करपति कार्यक्रम शुरू हुआ है, इस तरह से करदाताओं के लिए भी यह खेल शुरू किया जाना चाहिए।

ताकि वह इस खेल के माध्यम से जान सके कैसे उन्हें टैक्स बचाना है, कैसे उन्हें अधिकारियों और सरकार की कृपा को पाना है। नियम और कानून जानने के लिए उसके लिए भी इस तरह के क्विज प्रोग्राम बहुत जरूरी हैं। वैसे भी भारत में कहा जाता है हर आदमी अपने भाग्य को लेकर पैदा होता है। सुख और दुख उसके भाग्य में निहित है। रामराज में भगवान राम की कृपा सब पर है। सबके अपने-अपने भाग्य हैं। इसमें सरकार और अधिकारियों का कोई दोष नहीं है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

ब्रिक्स ने एकतरफा व्यापारिक फैसलों पर जताई गंभीर चिंता

वैश्विक विवादों के शांतिपूर्ण समाधान और प्रभावी बहुपक्षवाद पर दिया जोर

नई दिल्ली ।

ब्रिक्स देशों ने अपनी नई दिल्ली घोषणा में वैश्विक व्यापार में बढ़ते एकतरफा फैसलों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। समूह ने विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के नियमों के विपरीत टैरिफ और गैर-टैरिफ उपायों के इस्तेमाल की निंदा की है, साथ ही अंतरराष्ट्रीय कानून के खिलाफ एकतरफा दबाव वाले कदमों की भी कड़ी आलोचना की। घोषणा में ब्रिक्स देशों ने स्पष्ट किया कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित करने वाले और ब्ल्यूटीओ के नियमों का उल्लंघन करने वाले एकतरफा उपाय अस्वीकार्य हैं। इसके अलावा, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बढ़ रहे संघर्षों और परमाणु खतरे को लेकर भी चिंता जताई गई। समूह ने जोर दिया कि अंतरराष्ट्रीय शांति बनाए रखने के लिए सिर्फ संघर्ष शुरू होने के बाद कार्रवाई करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि संघर्षों को रोकने और उनकी मूल वजहों को दूर करने पर काम करने की आवश्यकता है। ब्रिक्स देशों ने अंतरराष्ट्रीय विवादों को बातचीत, आपसी सलाह और कूटनीति के जरिए शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने का आह्वान किया। समूह ने एक ऐसी बहुपक्षीय व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया जिसमें वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सभी देशों के विचारों और रुख का सम्मान किया जाए। आर्थिक सहयोग के तहत, ब्रिक्स देशों के बीच सीमा पार भुगतान को आसान बनाने के लिए चर्चा जारी रखने का भी समर्थन किया गया।

विक्टोरिया मिल्स डिविडेंड- रिकॉर्ड डेट पर नजर, 50 रुपए का फायदा

पात्र होने के लिए 17 सितंबर तक शेयर खरीदना होगा

नई दिल्ली।

रियल एस्टेट सेक्टर की कंपनी विक्टोरिया मिल्स लिमिटेड के शेयर डिविडेंड को लेकर निवेशकों के फोकस में हैं। कंपनी ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए अपने निवेशकों को 50 रुपये प्रति शेयर (फेस वैल्यू का 50 फीसदी) का लाभांश देने की सिफारिश की है, जिसकी रिकॉर्ड डेट जल्द ही आ रही है। विक्टोरिया मिल्स ने इस भारी-भरकम डिविडेंड के लिए 19 सितंबर को रिकॉर्ड डेट तय की है, जबकि 18 सितंबर 2026 को एक्स-डिविडेंड डेट रहेगी। इसका मतलब है कि यदि आप इस डिविडेंड के पात्र बनना चाहते हैं, तो आपको 17 सितंबर 2026 तक कंपनी के शेयर खरीदने होंगे। यह लाभांश कंपनी के 98,560 इक्विटी शेयरों पर दिया जाएगा, जिसे आगामी एनुअल जनरल मीटिंग में मंजूरी के बाद ही निवेशकों को वितरित किया जाएगा। कंपनी का यह शेयर बीते शुक्रवार को बीएसई पर 1.78 फीसदी की गिरावट के साथ 8471.00 रुपये पर बंद हुआ। हालांकि, कंपनी के शेयरों ने लंबे समय में अपने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। पिछले एक महीने में यह शेयर 64.48 फीसदी उछला है, जबकि 10 साल की अवधि में इसमें 218.56 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है। 83.79 करोड़ रुपये के मार्केट कैप वाली इस कंपनी के शेयरों का लेन-देन बीते एक महीने में 100 से कम रहा है, जो इसकी कम तरलता को दर्शाता है।

आरबीआई का टाटा संस को लिस्टिंग का आदेश, छूट की अर्जी खारिज

- बोर्ड में नेतृत्व की खींचतान के बीच फैसला, कुछ शेयरधारक पक्ष में तो कुछ विरोध में

नई दिल्ली । भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने टाटा समूह की होल्डिंग कंपनी टाटा संस को शेयर बाजार में सूचीबद्ध होने का आदेश दिया है। केंद्रीय बैंक ने कंपनी की उस अर्जी को खारिज कर दिया है, जिसमें उसने खुद को अनरजिस्टर्ड कोर इन्वेस्टमेंट कंपनी (सीआईसी) की श्रेणी से छूट देने की मांग की थी। इस फैसले से टाटा संस के लिए शेयर बाजार में लिस्टिंग अनिवार्य हो गई है। आरबीआई ने 11 सितंबर को जारी एक पत्र में कहा कि टाटा संस की अर्जी स्वीकार नहीं की जा सकती। केंद्रीय बैंक ने टाटा संस की कोर इन्वेस्टमेंट कंपनी (सीआईसी) का दर्जा छोड़ने की मांग को भी नामंजूर कर दिया, जिससे कंपनी के लिए शेयर बाजार में लिस्ट होना अब जरूरी हो गया है। यह फैसला ऐसे समय आया है जब टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने अपने तीसरे कार्यकाल के लिए पद पर न बने रहने की इच्छा जताई है, जिसकी वजह बोर्ड में चल रही असहमति बताई जा रही है। कंपनी के भीतर नेतृत्व और रणनीतिक दिशा को लेकर खींचतान जारी है, जिसमें लिस्टिंग का मुद्दा भी एक बड़ा विवाद बन गया है। टाटा संस में 66 फीसदी हिस्सेदारी रखने वाले सबसे बड़े शेयरधारक टाटा ट्रस्ट्स, जिसके चेयरमैन नोएल टाटा हैं, लिस्टिंग के खिलाफ हैं। ट्रस्ट्स ने इस मुद्दे पर एक प्रस्ताव भी पारित किया था। वहीं, दूसरे सबसे बड़े शेयरधारक शापूरजी पालोनजी समूह लिस्टिंग के पक्ष में है, क्योंकि यह उन्हें अपनी हिस्सेदारी बेचकर कर्ज चुकाने और पूंजी जुटाने का अवसर देगा। RBI के इस आदेश से यह आंतरिक संघर्ष और गहराने की संभावना है।

पेटेंट कार्यालय के लोगो के अनाधिकृत उपयोग पर नकेल, मंत्रालय की पूर्व-मंजूरी अनिवार्य

सरकारी पहचान का दुरुपयोग रोकने के लिए डीपीआईआईटी का सख्त कदम

नई दिल्ली ।

भारतीय पेटेंट कार्यालय (आईपीओ) की आधिकारिक पहचान और लोगो के अनाधिकृत उपयोग पर अब सख्त रोक लगा दी गई है। उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) ने एक सार्वजनिक नोटिस जारी कर स्पष्ट किया है कि आईपीओ के लोगो, प्रतीक चिह्न या उससे मिलते-जुलते डिजाइन का इस्तेमाल अब संबंधित मंत्रालय की पूर्व-मंजूरी के बिना नहीं किया जा सकेगा। इस नियम का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई है। डीपीआईआईटी द्वारा जारी नोटिस के अनुसार, कोई भी व्यक्ति, कारोबारी संस्था, डिजिटल मंच, ट्रेडमार्क या पेटेंट एजेंट अथवा कानूनी व्यवसायी किसी भी माध्यम - प्रिंट, डिजिटल, सोशल मीडिया, वेबसाइट या प्रायोजित ऑनलाइन विज्ञापन - में भारतीय पेटेंट कार्यालय के आधिकारिक लोगो का उपयोग, अनुकूलन या प्रदर्शन बिना सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के नहीं कर सकेंगे। पेटेंट, डिजाइन एवं ट्रेडमार्क महानियंत्रक कार्यालय (सीजीपीडीटीएम) के संज्ञान में आया था कि कई व्यक्ति, एजेंसियां और ऑनलाइन कानूनी सेवा मंच अपनी वेबसाइटों, सोशल मीडिया खातों और प्रचार सामग्री में भारतीय पेटेंट कार्यालय के लोगो का कथित रूप से अनाधिकृत इस्तेमाल कर रहे थे। डीपीआईआईटी ने चिंता व्यक्त की कि भारतीय पेटेंट कार्यालय का लोगो एक आधिकारिक सरकारी पहचान है और इसके अनधिकृत इस्तेमाल से आम लोगों, पेटेंट आवेदकों और अन्य हितधारकों के बीच सरकारी समर्थन या संबद्धता को लेकर गलत धारणा पैदा हो सकती है। डीपीआईआईटी ने सभी संस्थाओं और व्यक्तियों को अपनी वेबसाइट, प्रचार बैनर, विजिटिंग कार्ड और ऑनलाइन पोर्टलों से ऐसे लोगो या भ्रामक रूप से मिलते-जुलते डिजाइन को तत्काल हटाने का निर्देश दिया है। सरकार ने चेतावनी दी है कि भारतीय पेटेंट कार्यालय के लोगो का अनाधिकृत इस्तेमाल, गलत प्रस्तुतीकरण या उसकी नकल प्रतीक और नाम (अनुचित इस्तेमाल को रोकने वाला) अधिनियम 1950, ट्रेडमार्क अधिनियम 1999, कॉपीराइट अधिनियम 1957 और सूचना प्रौद्योगिकी कानून 2000 के तहत कार्रवाई का आधार बन सकता है। उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ दीवानी एवं आपराधिक कार्रवाई तथा प्रशासनिक दंड जैसी कठोर कार्रवाई की जा सकती है।

आईटीसी का आशीर्वाद ब्रांड, पांच साल में 20,000 करोड़ का लक्ष्य

- रेडी-टू-कुक, फोजन फूड और सत्तू सहित नई श्रेणियों में भी होगा विस्तार

बेंगलुरु ।

आईटीसी अपने प्रमुख खाद्य ब्रांड 'आशीर्वाद' को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की तैयारी में है। कंपनी का लक्ष्य है कि अगले पांच साल में आशीर्वाद उत्पादों पर उपभोक्ता खर्च मौजूदा 10,000 करोड़ रुपये से बढ़कर 20,000 करोड़ रुपये हो जाए। मई, 2002 में पूरी तरह गेहूं के आटा ब्रांड के रूप में शुरू हुआ आशीर्वाद अब देश के प्रमुख रसोई ब्रांडों में से एक बन गया है, जिसके पोर्टफोलियो में 200 से अधिक एसकेयू (स्टॉक कीपिंग यूनिट्स) हैं। ब्रांड ने आटा के अलावा स्टेपल्स, मसाले, ताजे और फ्रोजन खाद्य पदार्थों में भी अपनी मौजूदगी बढ़ाई है। मलिक के अनुसार, आटा श्रेणी में विकास की असीमित संभावनाएं हैं। कंपनी मल्टीग्रेन, हाई-प्रोटीन, ऑर्गेनिक और मिलेट आधारित आटा जैसे प्रीमियम उत्पादों पर ध्यान केंद्रित कर रही है, जो बेहतर गुणवत्ता, सुविधा और पोषण लाभ प्रदान करते हैं। आशीर्वाद अब बेसन, सेवईं, रवा, सोया चंक्स, फ्रोजन नान और पराठे के साथ-साथ ताजी चटनी और सांभर जैसे उत्पादों के माध्यम से नए उपभोक्ता वर्ग और उपयोग के अवसर तलाश रहा है। रेडी-टू-कुक श्रेणी में भी कंपनी ने कदम बढ़ाया है, जिसमें तैयार चपातियां विशेष रूप से युवा परिवारों को ध्यान में रखकर पेश की गई हैं। ये चपातियां बिना किसी अतिरिक्त प्रिजर्वेटिव के 5-6 दिनों तक उपयोग की जा सकती हैं। आईटीसी ने बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में आशीर्वाद चना सत्तू भी पेश किया है, जो प्रोटीन और फाइबर से भरपूर है। इसे पारंपरिक तरीके से बालू में भूनकर तैयार किया जाता है और जल्द ही इसे देशभर में उपलब्ध कराने की योजना है। कंपनी 10 रुपये का 'वैल्यू पैक' भी लाई है, जिसमें 10 ग्राम प्रोटीन मिलता है।

फेड के बयान, महंगाई के आंकड़ों पर रहेगी निवेशकों की नजर

- पिछले सप्ताह की गिरावट के बाद बाजार के लिए अहम रहेगा आगामी सप्ताह

मुंबई ।

घरेलू शेयर बाजारों के लिए आगामी सप्ताह बेहद अहम होने वाला है। पिछले सप्ताह कच्चे तेल की कीमतों में भारी उछाल के कारण देखी गई गिरावट के बाद, अब निवेशकों की निगाहें तीन प्रमुख वैश्विक और घरेलू आर्थिक संकेतकों पर टिकी रहेंगी। अमेरिकी फेडरल रिजर्व की महत्वपूर्ण बैठक, भारत के खुदरा और थोक महंगाई के आंकड़े, और कच्चे तेल की अंतर्राष्ट्रीय चाल मिलकर इस सप्ताह बाजार की दिशा तय करेंगे। अमेरिकी फेडरल रिजर्व की मुक्त बाजार समिति की बैठक 15 और 16 सितंबर को निर्धारित है। इस बैठक में लिए जाने वाले नीतिगत फैसले और फेड चेयरमैन का बयान वैश्विक बाजारों के साथ-साथ भारतीय शेयर बाजारों के लिए भी एक अहम दिशा निर्धारित करेगा। ब्याज दरों पर कोई भी संकेत या अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर फेड का दृष्टिकोण दुनियाभर के निवेशकों के सेंटिमेंट को प्रभावित करेगा। फेड के किसी भी कठोर रुख से वैश्विक इक्विटी बाजारों में बिकवाली का दबाव बढ़ सकता है। घरेलू मोर्चे पर, भारत के खुदरा उपभोक्ता मूल्य सूचकांक और थोक मूल्य सूचकांक महंगाई के आंकड़े इसी सप्ताह जारी होने वाले हैं। ये आंकड़े भारतीय रिजर्व बैंक की आगामी मौद्रिक नीति के लिए बेहद महत्वपूर्ण होंगे। यदि महंगाई उम्मीद से अधिक रहती है, तो यह बाजार की चिंताएं बढ़ा सकता है, क्योंकि इससे ब्याज दरों में बढ़ोतरी की अटकलें तेज होंगी। वहीं, नियंत्रण में रहने पर निवेशकों

का भरोसा मजबूत होगा। कच्चे तेल की कीमतें एक बार फिर निवेशकों की प्राथमिक चिंता का विषय बनी हुई हैं। पिछले सप्ताह इसमें आई भारी तेजी घरेलू बाजारों में गिरावट का एक प्रमुख कारण रही थी। इस सप्ताह भी कच्चे तेल की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में होने वाले उतार-चढ़ाव पर निवेशकों की पैनी नजर रहेगी। कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें न केवल कंपनियों की लागत बढ़ाती हैं, बल्कि महंगाई और रुपये पर भी दबाव डालती हैं, जिससे बाजार की धारणा प्रभावित होती है। कुल मिलाकर, आगामी सप्ताह में फेडरल रिजर्व की घोषणाएं, घरेलू महंगाई के आंकड़े और कच्चे तेल की कीमतें मिलकर भारतीय शेयर बाजारों की दिशा तय करेंगे। निवेशकों को इन प्रमुख आर्थिक संकेतकों पर बारीकी से नजर रखनी होगी और उसी के अनुसार अपनी रणनीति बनानी होगी।

एसएमएल लिमिटेड अगले 2-3 साल में हो सकती है सूचीबद्ध

पूंजी जुटाने के लिए शेयर बाजार में आने पर विचार

नई दिल्ली ।कृषि आदान कंपनी एसएमएल लिमिटेड (पूर्व में सल्फर इंडिया लिमिटेड) अगले दो से तीन साल में शेयर बाजार में सूचीबद्ध होने पर विचार कर रही है। कंपनी का लक्ष्य नई रासायनिक इकाइयों (एनसीई) के विकास के लिए आवश्यक पूंजी जुटाना है। हालांकि, कंपनी के एक अे धिकारी ने बताया कि इस संबंध में अभी अंतिम फैसला नहीं लिया गया है और कंपनी अगले एक-दो साल में स्थिति स्पष्ट होने की उम्मीद कर रही है। मुंबई स्थित एसएमएल लिमिटेड उन चुनिंदा भारतीय कंपनियों में से है जो नई और स्वामित्व वाली रासायनिक इकाइयों (एनसीई) पर काम कर रही है। ये सामान्य जेनेरिक उत्पादों से अलग कंपनी द्वारा विकसित किए गए नए अणु हैं। पिछले तीन वर्षों से कंपनी का यह एक महत्वपूर्ण फोकस क्षेत्र रहा है, हालांकि इसके विकास में प्रति एनसीई 7-8 करोड़ डॉलर का भारी निवेश होता है, जिसका खर्च कंपनी अब तक अपने आंतरिक शोध एवं विकास से उठा रही है। कंपनी फिलहाल करीब 450-470 करोड़ रुपये की नकदी के साथ लगभग कर्ज-मुक्त स्थिति में है। प्रबंधन इस पूंजी का उपयोग भविष्य में अधिग्रहण, नियामकीय परिसंपत्तियों या एनसीई कार्यक्रम में रणनीतिक साझेदारी के लिए कर सकता है। एसएमएल अपने पारंपरिक सल्फर उर्वरक कारोबार से आगे बढ़कर फसल पोषण, फसल संरक्षण और जैविक उत्पादों पर भी ध्यान दे रही है, जिसमें फसल पोषण अगले तीन वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ने वाला कारोबार होने की उम्मीद है। कमजोर मानसून, अमेरिका द्वारा लगाए गए शुल्क और भू-राजनीतिक तनाव के कारण परिवहन में बाधाओं को देखते हुए, एसएमएल ने चालू वित्त वर्ष के लिए अपना राजस्व लक्ष्य घटाकर 1,600 करोड़ रुपये कर दिया है, जो पहले 1,800 करोड़ रुपये था। हालांकि, यह पिछले वित्त वर्ष के 1,200-1,300 करोड़ रुपये के कारोबार से अधिक रहेगा। कंपनी ने उत्पादों की कीमतों में 15-20 प्रतिशत की बढ़ोतरी भी की है। कंपनी का अंतरराष्ट्रीय कारोबार 80 से अधिक देशों में फैला है, जिससे पिछले वित्त वर्ष में 600-700 करोड़ रुपये का राजस्व मिला था। इस वित्त वर्ष में इसके 700-800 करोड़ रुपये और अगले दो वर्षों में 1,000 करोड़ रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है, जिसमें निर्यात राजस्व में 70 प्रतिशत हिस्सेदारी फसल संरक्षण उत्पादों (कीटनाशक और फफूंदनाशक) की है।

सेबी लाएगा डेरिवेटिव्स बाजार में बड़े बदलाव

- निपटान मूल्य गणना और ट्रेडिंग समय को लेकर कंसल्टेशन पेपर जारी

मुंबई ।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने डेरिवेटिव्स कॉन्ट्रैक्ट्स की प्रणाली, बाजार की टाइमिंग और क्लोजिंग ऑक्शन सेशन (सीएएस) के परिचालन में बड़े बदलावों का प्रस्ताव दिया है। हाल ही में जारी कंसल्टेशन पेपर में, नियामक ने एक्सपायरी के दिनों में इंडेक्स और सिंगल-स्टॉक डेरिवेटिव्स की सेटलमेंट कीमत तय करने के लिए दो विकल्प सुझाए हैं। पहले विकल्प के तहत, सेबी ने ब्लेंडेड वीडब्ल्यूएपी (वॉल्यूम-वेटेड एवरेज प्राइस) का तरीका सुझाया है। इसमें सेटलमेंट की कीमत कंटीन्यूअस ट्रेडिंग सेशन (सीटीएस) के आखिरी 30 मिनट और 10 मिनट के सीएएस पीरियड के दौरान हुए ट्रेड के आधार पर तय की जाएगी, जिससे अधिक सटीक कीमत मिल सके। दूसरे विकल्प में, नियामक ने मौजूदा सीटीएस वीडब्ल्यूएपी तरीके को अंतरिम व्यवस्था के तौर पर बनाए रखने का प्रस्ताव दिया है।

इसके अलावा, सेबी ने क्लोजिंग ऑक्शन सेशन (सीएएस) के दौरान इंडिकेटिव इंडेक्स वैल्यू (आईआईवी) के प्रदर्शन को हटाने का प्रस्ताव दिया है, क्योंकि कुछ बाजार प्रतिभागियों ने इसका गलत अर्थ निकाला था। नियामक ने सीटीएस और सीएएस के बीच के ट्रांजिशन समय को पांच मिनट से घटाकर एक मिनट करने का भी प्रस्ताव रखा है। सीएएस के बाद डेरिवेटिव्स ट्रेडिंग विंडो को भी 10 मिनट से घटाकर पांच मिनट किया जाएगा, जिसे बाजार से मिले फीडबैक के आधार पर पर्याप्त माना गया है।

फार्मा पेटेंट जांच के लिए नए दिशानिर्देश, गुणवत्ता और एकरूपता पर जोर

- अदालती फैसलों और नवोन्मेषण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मसौदा जारी

नई दिल्ली । भारतीय पेटेंट कार्यालय (आईपीओ) ने औषधि क्षेत्र में पेटेंट आवेदनों की जांच प्रक्रिया को बेहतर बनाने के उद्देश्य से मौजूदा दिशानिर्देशों को अद्यतन करने का प्रस्ताव दिया है। जारी मसौदा दिशानिर्देशों में गुणवत्ता, निरंतरता और एकरूपता पर विशेष बल दिया गया है, साथ ही अदालतों के हालिया महत्वपूर्ण फैसलों को भी शामिल किया गया है। आईपीओ ने इस पहल का महत्व बताते हुए कहा कि भारत में फार्मास्युटिकल पेटेंट एक अत्यंत संवेदनशील विषय है। जहां खराब पेटेंट समाज पर अनावश्यक बोझ बन सकते हैं, वहीं मजबूत और उचित पेटेंट नवोन्मेषण तथा प्रौद्योगिकी विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यालय ने बताया कि वह अपनी आंतरिक प्रक्रियाओं और सार्वजनिक सेवाओं से जुड़े तंत्र को लगातार बेहतर बना रहा है। दिशानिर्देशों का अद्यतन, विशेष रूप से उत्पाद पेटेंट से जुड़े कई मुद्दों पर अदालतों के स्पष्ट होते फैसलों को ध्यान में रखकर किया गया है। इन न्यायिक व्याख्याओं को शामिल कर, पेटेंट कार्यालय जांच प्रक्रिया में उच्च स्तर की गुणवत्ता और एकरूपता सुनिश्चित करना चाहता है, जिससे भारतीय फार्मा उद्योग में स्वस्थ नवाचार को प्रोत्साहन मिल सके। यह कदम पेटेंट प्रणाली को अधिक पारदर्शी और कुशल बनाने की दिशा में उठाया गया है।

एफपीआई ने सितंबर में अब तक भारतीय शेयर बाजार से 13,000 करोड़ निकाले

कच्चे तेल की कीमतों में उछाल और अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल में बढ़ोतरी मुख्य कारण

नई दिल्ली ।

परिचय वैश्विक अनिश्चितता, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल में उछाल के बीच विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने सितंबर के पहले दो सप्ताह में भारतीय शेयर बाजार से 13,138 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की है। यह निकासी जुलाई और अगस्त में हुई भारी खरीदारी के बाद हुई है, जब एफपीआई भारतीय शेयरों में शुद्ध निवेशक रहे थे। चालू वर्ष (2023) में अब तक भारतीय शेयर बाजार से एफपीआई की कुल निकासी बढ़कर 2.37 लाख करोड़ रुपये हो गई है, जो पिछले पूरे वर्ष (2022) की 1.66 लाख करोड़ रुपये की निकासी से भी काफी अधिक है। एक निवेश मंच के अे धिकारी के अनुसार, सितंबर में बिकवाली का मुख्य कारण घरेलू नहीं, बल्कि वैश्विक घटनाक्रम हैं। अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के कारण उभरते बाजारों से पूंजी का बाहर निकलना स्वाभाविक है। ब्रेंट कच्चे तेल की कीमत बढ़कर 109.97 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई है, जिससे वैश्विक स्तर पर महंगाई का दबाव बढ़ सकता है। बाजार के जानकारों ने चेताया कि ऊंची कच्चे तेल की कीमतें और बढ़ती महंगाई से मौद्रिक नीति सख्त हो सकती है, जिससे बॉन्ड प्रतिफल और बढ़ेंगे। यदि अमेरिकी 10-वर्षीय बॉन्ड प्रतिफल पांच प्रतिशत तक पहुंचता है, तो वैश्विक शेयर बाजारों में तेज गिरावट आ सकती है और विदेशी निवेशक शेयरों से पैसा निकालकर अधिक रिटर्न देने वाले बॉन्ड में निवेश कर सकते हैं। इस दौरान विदेशी निवेशकों ने भारतीय ऋण बाजार से भी शुद्ध रूप से 2,305 करोड़ रुपये की निकासी की है।

तेल-तिलहन बाजार- सोयाबीन, बिनौला लुढ़के; मूंगफली में चमक

पाम-पामोलीन में मामूली सुधार, पर लागत से नीचे बिकवाली जारी

नई दिल्ली ।

बीते सप्ताह खाद्य तेल बाजार में मिला-जुला रुख रहा। आयातकों द्वारा लागत से नीचे दाम पर बिकवाली और ब्रांडेड कंपनियों की कमजोर मांग के चलते सोयाबीन तेल-तिलहन व बिनौला तेल के दाम गिरे।

इसके विपरीत, मजबूत मांग से मूंगफली तेल-तिलहन में सुधार दर्ज हुआ। औद्योगिक मांग के कारण पाम-पामोलीन व सोयाबीन डीगम तेल में भी मामूली सुधार दिखा, जबकि सरसों तेल-तिलहन के दाम स्थिर बने रहे। बाजार सूत्रों के अनुसार, आयातकों को सोयाबीन डीगम तेल की लागत से 5-6 रुपये प्रति किलो कम (लगभग 119.50 रुपये प्रति किलो) पर बेचना पड़ा।

पाम-पामोलीन भी लागत से नीचे बिकवाली का शिकार हुआ। सोयाबीन के तेल रहित खल (डीओसी) के निर्यात में पिछले वर्ष के मुकाबले 12.5 फीसदी की कमी तथा ब्रांडेड कंपनियों की घटती मांग से बिनौला तेल के दाम भी प्रभावित हुए। वहीं, मांग बढ़ने और आवक कमजोर रहने के कारण मूंगफली तेल-तिलहन में पर्याप्त सुधार आया। किसानों की कम दाम पर फसल न बेचने की प्रवृत्ति और ऊंची खरीद पर पेराई मिलों के घाटे के चलते सरसों तेल-तिलहन पिछले सप्ताहांत के स्तर पर ही स्थिर रहे। समीक्षाधीन सप्ताह में सोयाबीन दाना और सोयाबीन लूज का थोक भाव क्रमशः 400-400 रुपये की गिरावट के साथ क्रमशः 6,300-6,350 रुपये और 6,150-6,250 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।इसी प्रकार, आयातकों की लागत से नीचे दाम पर बिकवाली की वजह से दिल्ली में सोयाबीन तेल 100 रुपये की गिरावट के साथ 15,500 रुपये प्रति क्विंटल, सोयाबीन इंदौर तेल 100 रुपये की गिरावट के साथ 15,300 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

दूसरी ओर, सोयाबीन डीगम तेल 100 रुपये सुधार के साथ 11,950 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

अच्छी मांग के कारण बीते सप्ताह मूंगफली तिलहन का दाम 250 रुपये के सुधार के साथ 7,600-8,175 रुपये क्विंटल, मूंगफली तेल गुजरात 500 रुपये के सुधार के साथ 17,500 रुपये क्विंटल और मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल 75 रुपये के सुधार के साथ 2,755-3,055 रुपये प्रति टिन पर स्थिर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में सीपीओ तेल का दाम 25 रुपये के सुधार के साथ 14,125 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

एशिया के बेस्ट वर्कप्लेस 2026- भारत का दबदबा कायम, टॉप-100 में 34 भारतीय कंपनियां

फ्लिपकार्ट, इंफोसिस समेत कई भारतीय कंपनियों का शानदार प्रदर्शन

नई दिल्ली ।

दुनियाभर की कंपनियों में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए कौन सा कार्यस्थल सबसे बेहतर है, इसका पता लगाने के लिए ग्रेट प्लेस टू वर्क ने एशिया के सर्वश्रेष्ठ कार्यस्थलों की नई लिस्ट जारी की है। यह रैंकिंग कर्मचारियों की राय और उनके अनुभवों के आधार पर तैयार की गई है, जिसमें भारत ने अपना जबरदस्त प्रदर्शन किया है। इस लिस्ट में शामिल टॉप-100 बड़ी कंपनियों में 34 भारतीय कंपनियों ने जगह बनाई है, जो देश की मजबूत कार्य संस्कृति का प्रमाण है।

ग्रेट प्लेस टू वर्क की यह प्रतिष्ठित लिस्ट एशिया और मिडिल ईस्ट के लगभग 89 लाख कर्मचारियों के अनुभवों को शामिल करते हुए तैयार की गई है। कर्मचारियों से कंपनी में भरोसे, नेतृत्व, काम के माहौल, नए विचारों को बढ़ावा, कंपनी के मूल्यों और उनके कुल अनुभव के बारे में पूछा गया था। इस अध्ययन में कंपनियों के आकार या कमाई की बजाय कर्मचारियों के वास्तविक अनुभव को ही मूल्यांकन का आधार बनाया गया है।

बड़ी कंपनियों की श्रेणी में वैश्विक स्तर पर जिन 10 कंपनियों को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, उनमें हिलटन, मैरियोट इंटरनेशनल, सिस्को, एब्वी, डीएचएल, इंटरकॉन्टिनेंटल होटल्स ग्रुप, माइक्रो टेक्नोलॉजी, टीपी, एसेंचर और कैपेला का नाम शामिल है। इस पूरी रैंकिंग में भारत का प्रदर्शन बेहद मजबूत रहा है। बड़ी कंपनियों की टॉप-100 लिस्ट में 34 कंपनियां भारत की हैं। इनमें फ्लिपकार्ट ग्रुप, इंफोसिस, एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस, एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक, रिलायंस रिटेल, बजाज फाइनेंस, मैक्स हेल्थकेयर, उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक, जेनसर टेक्नोलॉजीज, एक्सपीरियन, एडलवीज लाइफ और एचपी इंक जैसी प्रमुख भारतीय कंपनियां शामिल हैं। इसके अलावा, छोटी और मध्यम कंपनियों की लिस्ट में एनआईए इंस्टीट्यूशंस, वहदम इंडिया, चैलेट होटल्स, सेरेंटिका रिन्यूबल इंडिया, किम्बल और एलएमएस (लॉर्ड महावीरा सर्विसेज इंडिया) सहित 6 भारतीय कंपनियों ने भी अपनी जगह बनाई है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि लिस्ट में शामिल लगभग 93 फीसदी कर्मचारियों ने अपनी कंपनी को काम करने के लिए एक बेहतरीन जगह बताया।

इंडियन बैंक जीवन बीमा एसेट मैनेजमेंट में उतरेगा

दुबई में प्रतिनिधि कार्यालय और नए देशों में मौजूदगी की भी योजना

- चेन्नई ।

सार्वजनिक क्षेत्र का इंडियन बैंक जीवन बीमा और संपत्ति प्रबंधन (म्यूचुअल फंड) कारोबार में उतरने की अपनी योजना को तेजी से आगे बढ़ा रहा है। बैंक के एक प्रमुख अधिकारी ने बताया कि इन क्षेत्रों में प्रस्तावित अनुषंगी कंपनियों या संयुक्त उद्यमों के लिए जल्द ही निदेशक मंडल से मंजूरी ली जाएगी। अे धिकारी ने पुष्टि की कि यह योजना पूरी तरह पटरी पर है। बोर्ड की मंजूरी मिलने के बाद, बैंक आवश्यक नियामकीय और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को शुरू करेगा।

कुमार ने इस पूरी कवायद में सही साझेदार की पहचान को सबसे महत्वपूर्ण बताया, जिससे तेजी से कारोबार का विस्तार और संपत्ति सृजन हो सके। उन्होंने अनुमान जताया कि इस पूरी प्रक्रिया में लगभग एक साल का समय लग सकता है। उन्होंने कहा कि अनुषंगी कंपनियां या संयुक्त उद्यम रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण होते हैं, जो संपत्ति सृजन के साथ-साथ ब्रांड को भी मजबूत करते हैं। इंडियन बैंक पहले से ही साधारण बीमा क्षेत्र में यूनिवर्सल सोमपो जनरल इंश्योरेंस कंपनी में 28.52 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ मौजूद है।

वैश्विक विस्तार के मोर्चे पर, इंडियन बैंक दुबई में एक प्रतिनिधि कार्यालय खोलने की तैयारी में है। इसका उद्देश्य पश्चिम एशिया में बसे बड़े भारतीय प्रवासी समुदाय से मिलने वाले कारोबारी अवसरों का लाभ उठाना है। बैंक के बोर्ड ने दुबई कार्यालय को मंजूरी दे दी है और अब नियामकीय मंजूरियां ली जा रही हैं। इंडियन बैंक की वर्तमान में सिंगापुर और श्रीलंका में अंतरराष्ट्रीय शाखाएं हैं, जबकि बैंक मलेशिया और इंडोनेशिया में भी अपनी मौजूदगी स्थापित करने की संभावनाएं तलाश रहा है। गांधीनगर स्थित गिफ्ट सिटी की शाखा से भी अच्छा कारोबार मिल रहा है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

गणेशोत्सव

विनायक चतुर्थी का पर्व भगवान गणेश को समर्पित है। यह पर्व हिन्दू धर्म के मानने वालों का मुख्य पर्व है। विनायक चतुर्थी को गणेशोत्सव के रूप में सारे विश्व में हर्षोल्लास व श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। भारत में इसकी धूम यूं तो सभी प्रदेशों में होती है, परन्तु विशेष रूप से यह महाराष्ट्र में मनाया जाता है।

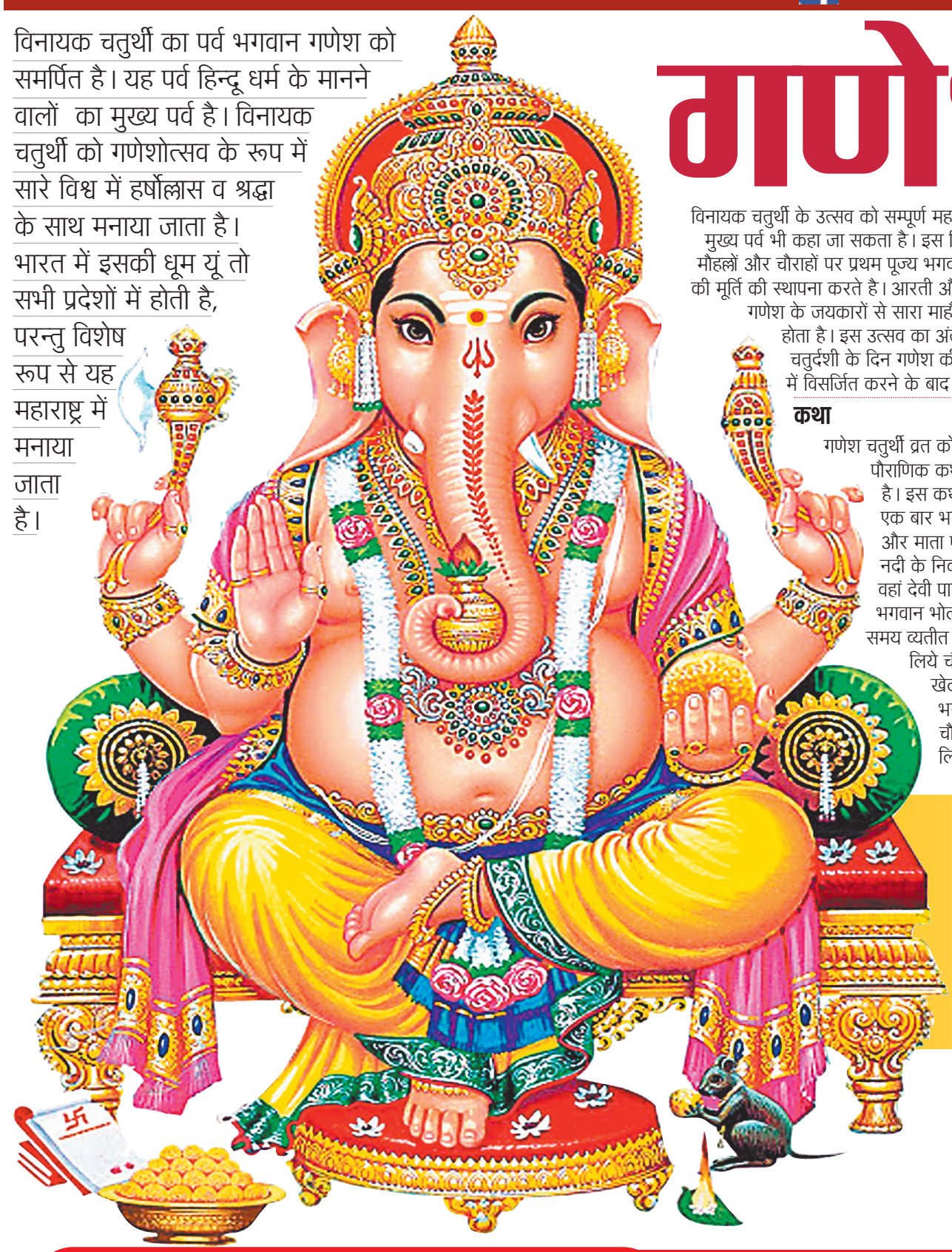

विनायक चतुर्थी के उत्सव को सम्पूर्ण महाराष्ट्र का मुख्य पर्व भी कहा जा सकता है। इस दिन लोग मौहल्लों और चौराहों पर प्रथम पूज्य भगवान गणेशजी की मूर्ति की स्थापना करते है। आरती और भगवान श्री गणेश के जयकारों से सारा माहौल गुंज रहा होता है। इस उत्सव का अंत अनंत चतुर्दशी के दिन गणेश की मूर्ति समुद्र में विसर्जित करने के बाद होता है।

कथा

गणेश चतुर्थी व्रत को लेकर एक पौराणिक कथा प्रचलन में है। इस कथा के अनुसार एक बार भगवान शंकर और माता पार्वती नर्मदा नदी के निकट बैठे थे। वहां देवी पार्वती ने भगवान भोलेनाथ से समय व्यतीत करने के लिये चौपड़ का खेल खेलने को कहा। भगवान शंकर चौपड़ खेलने के लिये तैयार तो हो गये, परन्तु इस खेल मे हार-जीत का फैसला कौन करेगा? इसका प्रश्न उठा, इसके जवाब में भगवान भोलेनाथ ने कुछ तिनके एकत्रित कर उसका पुतला बनाकर, उस पुतले की प्राण प्रतिष्ठा कर दी और पुतले से कहा कि- 卐बेटा हम चौपड़ खेलना चाहते है, परन्तु हमारी हार-जीत का फैसला करने वाला कोई नहीं है। इसलिये तुम बताना की हम में से कौन हारा और कौन जीता।

चौपड़ का खेल

यह कहने के बाद चौपड़ का खेल प्रारम्भ हो गया। खेल तीन बार खेला गया, और संयोग से तीनों बार पार्वती जी जीत गईं। खेल के समाप्त होने पर बालक से हार-जीत का फैसला करने के लिये कहा गया, तो बालक ने महादेव को विजयी बताया। यह सुनकर माता पार्वती क्रोधित हो गईं और उन्होंने क्रोध में आकर बालक को लंगडा होने व कीचड़ में पड़े रहने का श्राप दे दिया। बालक ने माता से माफ़ी मांगी और कहा- मुझसे अज्ञानता वश ऐसा हुआ, मैनें किसी द्वेष में ऐसा नहीं किया।卐 बालक के क्षमा मांगने पर माता ने कहा- यहाँ गणेश पूजन के लिये नाग कन्याएं आयेंगी, उनके कहे अनुसार तुम गणेश व्रत करो, ऐसा करने से तुम मुझे प्राप्त करोगे। यह कहकर माता पार्वती भगवान शिव के साथ कैलाश पर्वत पर चली गई।

गणेश का प्रसन्न होना

ठीक एक वर्ष बाद उस स्थान पर नाग कन्याएं आईं। नाग कन्याओं से श्री गणेश के व्रत की विधि मालुम करने पर उस बालक ने 21 दिन लगातार गणेश जी का व्रत किया। उसकी श्रद्धा देखकर भगवान गणेश प्रसन्न हो गए और उन्होंने बालक को मनोवांछित फल मांगने के लिये कहा। बालक ने कहा- हे विनायक! मुझमें इतनी शक्ति दीजिए, कि मैं अपने पैरों से चलकर अपने माता-पिता के साथ कैलाश पर्वत पर पहुंच सकूं और वो यह देख प्रसन्न हों।卐 बालक को यह वरदान देकर भगवान गणेश अन्तर्धान हो गए। बालक इसके बाद कैलाश पर्वत पर पहुंच गया और वहाँ पहुंचने की कथा उसने भगवान महादेव को सुनाई। उस दिन से पार्वती जी शिवजी से विमुख हो गईं। देवी के रुष्ठ होने पर भगवान शंकर ने भी बालक के बताये अनुसार गणेश का व्रत 21 दिनों तक किया। इसके प्रभाव से माता के मन से भगवान भोलेनाथ के लिये जो नाराजगी थी, वह समाप्त हो गई।

भगवान गणेशजी ही प्रथम पूज्य क्यों?

एक बार कार्तिकेय व गणेशजी में होड़ लगी कि सबसे बुद्धिमान कौन? तब भगवान भोलेनाथ जी ने कहा जो पृथ्वी के सात चक्कर लगाकर सबसे पहले लौट कर आएगा वह बुद्धिमान व प्रथम पूजनीय होगा। गणेशजी भारी भरकम थे। वाहन भी चूहा व कार्तिकेय उत्तम वजन के थे और उनका वाहन मोर। स्वामी कार्तिकेय चल पड़े। गणेशजी सोचने लगे। गणेशजी ने सोचा माता-पिता ही जन्मदाता है तो सबसे महान वही हुए। उन्हीं के सात चक्कर लगा लिए और खड़े हो गए।

कार्तिकेय भी आ पहुंचे। जब निर्णय की बारी आई तो भगवान आशुतोषजी ने कहा कि गणेश बुद्धिमान व श्रेष्ठ हैं, क्योंकि माता-पिता ही समस्त तीर्थों से बड़े होते हैं। तभी से भगवान गणेशजी को सब देवताओं से पहले पूजा जाता है एवं हर मागंलिक कार्य में श्रीगणेश जी का ही पूजन स्मरण व स्थापना की जाती है। इससे हमें सीख मिलती है कि जो अपने माता-पिता की सेवा करता है, उन्हें सब तीर्थों का फल मिल जाता है। फिर वह तीर्थयात्रा करें या ना करें।

हर बाधा दूर करते हैं श्रीगणेश

प्राचीन समय में हल्दी को गणेश जी की मूर्ति के रूप में पूजा जाता था। हल्दी को मंगलकारी, धन व ज्ञान का प्रतीक माना जाता था। जिस देवता की स्तुति इन शब्दों से की जाती हो, ऐसे पूजनीय रिद्धि-सिद्धि के स्वामी विघ्नहर्ता के जप में हर शुभ मांगलिक कार्य व पूजन में सर्वप्रथम पूजे जाने वाले भालचंद्र यानी श्रीगणेश जी वैवाहिक कार्यों में भी सर्वप्रथम न सिर्फ पूजनीय हैं, अपितु वैवाहिक निमंत्रणों में निमंत्रित किए जाने वाले प्रथम अतिथि भी हैं। समस्त मांगलिक कार्यों में प्रथम पूजनीय होने व हर विघ्न और कष्ट को दूर करने की उनकी महता के कारण ही मंगलमूर्ति भी कहे जाते हैं।

यह माना जाता है कि श्रीगणेश जी समस्त दिशाओं में उपस्थित हैं एवं उनके पूजन के साथ शुरू किया गया कोई भी कार्य निर्विघ्न रूप से पूर्ण होता है। अतः सबसे पहले उनकी स्तुति व पूजन कर कार्य शुरू किए जाते हैं। चाहे वैवाहिक कार्यक्रम हो अथवा गृह प्रवेश सभी में श्रीगणेश जी को याद किया जाता है। यहां तक कि वैवाहिक व अन्य मांगलिक कार्यों के विभिन्न चित्र सर्वप्रथम अंकित किए जाते हैं अथवा उनकी स्तुति से निमंत्रण-पत्र का आरंभ होता है। हमारे समाज में प्राचीन समय से यह मान्यता रही है कि श्रीगणेश जी के पूजन से शुरू किए गए कार्य में कभी कोई बाधा नहीं आती और कार्य निर्विघ्न रूप से संपन्न होता है। श्रीगणेश को समस्त गणों का अधिपति माना जाता है और इसी वजह से वे गणपति के नाम से भी जाने जाते हैं।

गणेश जी के मांगलिक कार्यों में प्रथम पूजन को लेकर यह कथा प्रचलित है कि एक बार समस्त देवी-देवताओं को पृथ्वी का चक्कर लगाने को कहा गया, किंतु श्रीगणेश जी अपने भारी शरीर व छोटे से वाहन मूषक के कारण दुविधा में थे कि वे चक्कर कैसे पूर्ण करें। उन्होंने अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए माता-पिता पार्वती व शिवजी की परिक्रमा कर ली और सभी के पूछने पर कारण बताया कि माता-पिता तो समस्त संसार के तुल्य हैं। वे ब्रह्मा के सहायक हैं, अतः उनकी पूजा का विशेष महत्व है। प्राचीन समय में हल्दी को गणेश जी को मूर्ति स्वरूप पूजा जाता था। गणेश जी की उपस्थिति ओंमकार में मानी जाती है। ऐसा माना जाता है कि गणेश जी के शुभागमन के साथ सारी बाधाएं खुद-ब-खुद खत्म हो जाती हैं। श्रीगणेश जी सभी का कल्याण करने वाले माने जाते हैं।

श्री गणेश पूजन की आसान विधि

श्रीगणेश पूजा अपने आपमें बहुत ही महत्वपूर्ण व कल्याणकारी है। चाहे वह किसी कार्य की सफलता के लिए हो या फिर चाहे किसी कामनापूर्ति स्त्री, पुत्र, पौत्र, धन, समृद्धि के लिए या फिर अचानक ही किसी संकट मे पड़े हुए दुखों के निवारण हेतु हो।

- अर्थात जब कभी किसी व्यक्ति को किसी अनिष्ट की आशंका हो या उसे नाना प्रकार के शारीरिक या आर्थिक कष्ट उठाने पड़ रहे हो तो उसे श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक किसी योग्य व विद्वान ब्राह्मण के सहयोग से श्रीगणपति प्रभु व शिव परिवार का व्रत, आराधना व पूजन करना चाहिए।

- पूजन से पहले नित्यादि क्रियाओं से निवृत्त होकर शुद्ध आसन में बैठकर सभी पूजन सामग्री को एकत्रित कर पुष्प, धूप, दीप, कपूर, रोली, मौली लाल, चंदन, मोदक आदि एकत्रित कर क्रमशः पूजा करें।
- भगवान श्रीगणेश को तुलसी दल व तुलसी पत्र नहीं चढ़ाना चाहिए। उन्हें, शुद्ध स्थान से चुनी हुई दुर्वा को धोकर ही चढ़ाना चाहिए।
- श्रीगणेश भगवान को मोदक (लड्डू) अधिक प्रिय होते हैं इसलिए उन्हें देशी घी से बने मोदक का प्रसाद भी चढ़ाना चाहिए।
- श्रीगणेश स्त्रोत से विशेष फल की प्राप्ति होती है।
- श्रीगणेश सहित प्रभु शिव व गौरी, नन्दी, कार्तिकेय सहित सम्पूर्ण शिव परिवार की पूजा षोड़षोपचार विधि से करना चाहिए।
- व्रत व पूजा के समय किसी प्रकार का क्रोध व गुस्सा न करें। यह हानिप्रद सिद्ध हो सकता है।
- श्रीगणेश का ध्यान करते हुए शुद्ध व सात्विक चित से प्रसन्न रहना चाहिए।
- शास्त्रानुसार श्रीगणेश की पार्थिव प्रतिमा बनाकर उसे प्राणप्रति?ष्ठित कर पूजन-अर्चन के बाद विसर्जित कर देने का आख्यान मिलता है। किन्तु भजन-कीर्तन आदि आयोजनों और सांस्कृतिक आयोजनों के कारण भक्त 1, 2, 3, 5, 7, 10 आदि दिनों तक पूजन अर्चन करते हुए प्रतिमा का विसर्जन करते हैं।
- किसी भी पूजा के उपरांत सभी आवाहित देवताओं की शास्त्रीय विधि से पूजा-अर्चना करने के बाद उनका विसर्जन किया जाता है, किन्तु श्री लक्ष्मी और श्रीगणेश का विसर्जन नहीं किया जाता है। इसलिए श्रीगणेश जी की प्रतिमा का विसर्जन करें, किन्तु उन्हें अपने निवास स्थान में श्री लक्ष्मी जी सहित रहने के लिए निमंत्रित करें।
- पूजा के उपरांत अपराध क्षमा प्रार्थना करें, सभी अतिथि व भक्तों का यथा व्यवहार स्वागत करें।
- पूजा कराने वाले ब्राह्मण को संतुष्ट कर यथा विधि पारिश्रामिक (दान) आदि दें, उन्हें प्रणाम कर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर दीर्घायु, आरोग्यता, सुख, समृद्धि, धन-ऐश्वर्य आदि को बढ़ाने के योग्य बनें।

भारतीय धर्म संस्कृति में किसी कार्य की सफलता हेतु पहले मंगलाचरण या फिर पूज्य देवों के वंदना की परंपरा रही है। किसी कार्य को सुचारू रूप से निर्विघ्नपूर्वक संपन्न करने हेतु सर्वप्रथम श्रीगणेश जी की वंदना व अर्चना का विधान है। इसीलिए सनातन धर्म में सर्वप्रथम श्रीगणेश की पूजा से ही किसी कार्य की शुरुआत होती है। जो भी भक्त भगवान गणेश का व्रत या पूजा करता है उसे श्रीगणेश प्रभु की कृपा और मनोवांछित फल की प्राप्ति अवश्य ही होती है।

श्री गणेश एक रूप अनेक

गणेश शब्द की व्युत्पत्ति हुई है गणानां जीवजातानां यः ईशः स्वामी सः गणेशः से। अर्थात,जो समस्त जीव जाति के ईश-स्वामी हैं वह गणेश हैं। इनकी पूजा से सभी विघ्न नष्ट होते हैं। लेकिन अन्य देवताओं की तरह गणेश जी के भी कई रूप हैं।

गणेश पुराण के क्रीड़ा खंड में युग-भेद से गणेश जी के चार रूपों की व्याख्या करके उनके चार भिन्न वाहन बताए गए हैं।

सतयुग में गणेश जी का वाहन सिंह है, वे दस भुजा वाले हैं और उनका नाम विनायक है।

त्रेता युग में वाहन मोर है, छः भुजाएं हैं और नाम मयूरेश्वर है।

द्वापर में वाहन चूहा (मूषक) है, भुजाएं चार हैं और नाम गजानन है।

कलयुग में दो भुजाएं हैं वाहन घोड़ा है और नाम धूम्रकेतु है।

इन चारों रूपों की उपासना विधि व लीला चरित्र का विवरण गणेश पुराण में प्राप्त होता है।

वर्तमान में गणेश जी का सर्वप्रसिद्ध वाहन मूषक(चूहा)माना जाता है। विभिन्न मंत्रों के ध्यान में इनके मूषक वाहन का ही संकेत पाया जाता है।

विशिष्ट वस्तुओं के पूजन भेद से गणेश जी के अनेक रूप प्रसिद्ध हैं जैसे हरिद्रा गणेश,दूर्वा गणेश,शमी गणेश,गोमेद गणेश आदि।

कामना भेद से भी इनके भिन्न रूपों की उपासना की जाती है जैसे संतान प्राप्ति हेतु संतान गणपति,विद्या प्राप्ति हेतु विद्या गणपति आदि।

सामान्य उपासक दैनिक उपासना में गणेश जी के प्रसिद्ध द्वादश नाम स्तोत्र,संकट नाशक स्तोत्र,गणपति अथर्वशीर्ष,गणेश कवच,शतनामस्तोत्र आदि का सुविधानुसार पाठ करके इनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं।

विशिष्ट उपासना के अंतर्गत गणपति अथर्वशीर्ष से इनका अभिषेक किया जाता है। गणेश पुराण एवं रुद्रयामल तंत्र में वर्णित सहस्र नामस्तोत्र की नामावली के द्वारा दूर्वा से इनका अर्चन किया जाता है। गणपति योग भी वैदिक पद्धति के द्वारा संपन्न कराया जाता है।

अलग-अलग होती है उपासना-

भगवान गणेश की उपासना अनेक प्रकार से होती है। गणेशमूर्ति के अलग-अलग प्रकार की अर्चना का विधान भी अलग-अलग होता है। दो से अठारह भुजा एवं एकमुखी से दशमुखी मूर्तियों का पूजन होता है और इनसे संबंधित मंत्र,कवच,यंत्र,स्त्रोत आदि का विधान तंत्र शास्त्र के मान्य ग्रंथों,मंत्र महार्णव,मंत्रमहोदधि,शारदा तिलक,तंत्र सार आदि में अंतर पाया जाता है। गणपति पूजन में मुख्यतः दूर्वा,शमी के पत्ते और मोदक (लड्डू)अर्पित किए जाते हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

भूकंप से फिर हिल उठी तिब्बत की धरती, रिक्टर स्केल पर कितनी रही तीव्रता?

ल्हासा , एजेंसी। भारत के पड़ोस में तिब्बत की धरती शुक्रवार को भूकंप से हिल उठी है। बीते कुछ दिनों से इस क्षेत्र में बार-बार भूकंप की घटना देखने को मिल रही है। आइए जानते हैं कि रिक्टर स्केल पर कितनी रही इस भूकंप की तीव्रता। भारत समेत दुनियाभर के अनेक देशों में लगातार हो रही भूकंप की घटनाओं ने लोगों के मन में डर बैठा दिया है। भूकंप के कारण बीते कुछ समय में हजारों लोगों की मौत भी हुई है। अब भारत के पड़ोस में स्थित तिब्बत में भी शुक्रवार को सुबह-सुबह भूकंप के कारण धरती हिल उठी है। सामने आई जानकारी के अनुसार, तिब्बत में आए इस भूकंप की तीव्रता 3.7 मापी गई है। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी ने शुक्रवार को तिब्बत में आए भूकंप के बारे में जानकारी दी है। संस्थान के अनुसार, शुक्रवार को सुबह 4 बजकर 2 मिनट पर तिब्बत में भूकंप आया है। इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 3.7 मापी गई है। इस भूकंप का केंद्र धरती से 30 किलोमीटर की गहराई में था। आपको बता दें कि इससे पहले 8 सितंबर को भी तिब्बत में 5.3 तीव्रता का भूकंप आया था। इस भूकंप के झटके नेपाल में भी महसूस किए गए थे। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी ने बताया है कि शुक्रवार को सुबह 6 बजकर 56 मिनट पर पश्चिम बंगाल में भी भूकंप के झटके लगे हैं। जानकारी के अनुसार, ये भूकंप राज्य के अलीद्वारपुर में आया है। इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3 मापी गई है। भूकंप का केंद्र धरती से 9 किमी की गहराई में था। इसके अलावा शुक्रवार को अफगानिस्तान में भूकंप के झटके लगे हैं। ये भूकंप 3.5 की तीव्रता का था और इसका केंद्र धरती से 163 किलोमीटर भीतर था। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि भूकंप आने का कारण मुख्य तौर पर धरती के भीतर मौजूद टेक्टोनिक प्लेटों का आपस में टकराना, रगड़ना या खिसकना होता है। इसके कारण जमीन के अंदर जमा ऊर्जा अचानक से बाहर की ओर निकलती है। इसके कारण धरती पर भूकंप के झटके महसूस किए जाते हैं। कई बार भूकंप हल्की तीव्रता के होते हैं। हालांकि, कई बार भूकंप की तीव्रता इतनी ज्यादा होती है कि वह एक बड़े इलाके को पूरी तरह तबाह कर देती है और हजारों लोगों की मौत का कारण बनती है।

क्रोएशिया के स्कूल में छात्र ने दो को मारा चाकू;

जाग्रेब, एजेंसी। क्रोएशिया की राजधानी जाग्रेब के एक हाईस्कूल में शुक्रवार को एक छात्र ने दूसरे छात्र और स्कूल के एक कर्मचारी पर चाकू से हमला कर दिया। पुलिस ने आरोपी छात्र को हिरासत में ले लिया है। शिक्षा मंत्रालय के मुताबिक, हमले में किसी धारदार वस्तु का इस्तेमाल किया गया। घायल छात्र को कई चोटों के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी सर्जरी हुई। डॉक्टरों ने उसकी हालत खतरे से बाहर बताई है। स्कूल कर्मचारी के चेहरे पर चोट लगी है। अधिकारियों के अनुसार, दोनों छात्रों के बीच एक दिन पहले किसी बात को लेकर विवाद हुआ था।

अल्जीरिया ने यूएई से तोड़े राजनयिक संबंध

अल्जीरिया, एजेंसी। अल्जीरिया ने गुरुवार को संयुक्त अरब अमीरात से राजनयिक संबंध तोड़ दिए। अल्जीरियाई विदेश मंत्रालय ने कथित 'उकसाने वाली और शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयों' तथा 'अनुचित व्यवहार' का हवाला दिया। संयुक्त अरब अमीरात ने इस फैसले को अस्थायी होने की उम्मीद जताई है।

मोहम्मद बिन सलमान चाहते थे अमेरिका करे हूतियों पर हमला, दो बार लगाया फोन पर नहीं मानें ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसी। इस साल 28 फरवरी को शुरू हुए पश्चिम एशिया में संघर्ष थमने का नाम नही ले रहा है। ईरान और अमेरिका-इस्राइल के बीच जारी युद्ध के अलावा अब सऊदी अरब और यमन के हूती विद्रोहियों के बीच भी तनाव बढ़ गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने अमेरिका से हूतियों के खिलाफ सैन्य कार्रवाई करने की अपील की है। एक्सियोस की एक रिपोर्ट के अनुसार, मामले को लेकर सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से दो बार फोन पर बात की। उन्होंने ट्रंप से हूतियों के खिलाफ हमला करने का आग्रह किया। हूतियों ने लाल सागर के एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग को रोक रखा है।

अमेरिका-जापान-दक्षिण कोरिया की ड्रिल से भड़का उत्तर कोरिया! किम जोंग ने समुद्र में दाग दीं कई मिसाइलें

सियोल, एजेंसी। अमेरिका, दक्षिण कोरिया और जापान की 5 दिवसीय सैन्य ड्रिल खत्म होते ही उत्तर कोरिया ने समुद्र की ओर कई कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें दाग दीं। दक्षिण कोरिया और उसके पड़ोसी देशों ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। उत्तर कोरिया इस सैन्य अभ्यास को अपने खिलाफ उकसावे की कार्रवाई मानता है। यह करीब 3 हफ्ते बाद उत्तर कोरिया का पहला बैलिस्टिक मिसाइल लॉन्च है। इससे पहले भी उत्तर कोरिया अमेरिका और दक्षिण कोरिया के सैन्य अभ्यासों का विरोध करते हुए मिसाइल परीक्षण कर चुका है।

वॉनसान इलाके से दागी गई मिसाइलें : दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के मुताबिक, उसने उत्तर कोरिया के पूर्वी तटीय इलाके वॉनसान से कई मिसाइलें दागे जाने का पता लगाया। मिसाइलों ने करीब 250 किलोमीटर की दूरी तय की और उत्तर कोरिया के पूर्वी समुद्री इलाके की ओर गईं। दक्षिण कोरियाई सेना ने अपनी निगरानी व्यवस्था बढ़ा दी है। साथ ही मिसाइल लॉन्च को लेकर अमेरिका और जापान के साथ लगातार जानकारी साझा की जा रही है। दक्षिण कोरिया की राष्ट्रपति राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने उत्तर कोरिया से बैलिस्टिक मिसाइलों की फायरिंग रोकने की अपील की है।

सैन्य अभ्यास को उत्तर कोरिया मानता है उकसावा : अमेरिका, दक्षिण कोरिया और जापान ने शुक्रवार को अपना 5 दिवसीय 'फ्रीडम एज'

सैन्य अभ्यास तय कार्यक्रम के मुताबिक खत्म किया। अमेरिकी पैसिफिक कमांड के मुताबिक, तीनों देशों की सेनाओं ने हवा, समुद्र और साइबर क्षेत्र में एक साथ अभ्यास किया। इसका मकसद आपसी तालमेल और संयुक्त सैन्य क्षमता को मजबूत करना था। अभ्यास में समुद्री युद्धाभ्यास, हवा में ईंधन भरने की ट्रेनिंग, साइबर समन्वय और मेडिकल ड्रिल जैसी गतिविधियां शामिल थीं। उत्तर कोरिया इसे अपनी सुरक्षा के लिए खतरा और संभावित हमले की तैयारी के तौर पर देखता है।

अमेरिका बोला, 'तत्काल कोई खतरा नहीं' : अमेरिकी पैसिफिक कमांड ने कहा कि उत्तर कोरिया की मिसाइल लॉन्चिंग से अमेरिकी क्षेत्र या उसके सहयोगियों के लिए तत्काल कोई खतरा नहीं है। कमांड ने कहा कि अमेरिका अपने देश और क्षेत्र में अपने सहयोगियों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। दक्षिण कोरियाई सेना ने पहले ही कहा था कि यह अभ्यास रक्षात्मक है और इसका मकसद उत्तर कोरिया के परमाणु खतरे की स्थिति में तीनों देशों की संयुक्त प्रतिक्रिया क्षमता बढ़ाना है, लेकिन उत्तर कोरिया ये बात नहीं मानता।

उत्तर कोरिया ने पहले ही दी थी धमकी : सोमवार को तीन देशों का सैन्य अभ्यास शुरू होने के कुछ घंटे बाद उत्तर कोरिया के रक्षा मंत्री किम सोंग गी ने इसकी आलोचना की थी। उन्होंने चेतावनी दी थी कि उत्तर कोरिया अपनी ताकत के आधार पर 'मजबूत और निर्णायक जवाबी कदम' उठाएगा। इसके बाद अब मिसाइल लॉन्च को उसी चेतावनी के जवाब में उठाए गए कदम के तौर पर देखा जा रहा है। इससे पहले उत्तर कोरिया की सेना ने अमेरिका-दक्षिण कोरिया के एक अन्य सैन्य अभ्यास के बाद करीब 10 कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें समुद्र की ओर दागी थीं।

परमाणु ताकत बढ़ाने पर किम का जोर : उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन ने हाल ही में देश के दूसरे नौसैनिक विध्वंसक जहाज को सेवा में शामिल करने के कार्यक्रम में अधिक भरोसेमंद परमाणु प्रतिरोधक क्षमता बनाने की जरूरत बताई थी। उसके दोनों विध्वंसक जहाज परमाणु क्षमता वाली मिसाइलें ले जाने में सक्षम हैं। दूसरे विध्वंसक जहाज को पिछले साल लॉन्च करने की कोशिश के दौरान नुकसान पहुंचा था। मरम्मत के बाद उसे दोबारा लॉन्च किया गया। किम जोंग उन का पूरा फोकस अपने परमाणु हथियारों के जखीरे को बढ़ाने पर है।

ट्रंप के कदम के बाद भी नहीं माने किम : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पिछले महीने पेंटागन को दक्षिण कोरिया के साथ होने वाले वार्षिक 'उल्ची फ्रीडम शील्ड' सैन्य अभ्यास को काफी कम करने का आदेश दिया था। ट्रंप ने इसके पीछे किम जोंग उन के साथ अपने अच्छे संबंधों का हवाला दिया था। उत्तर कोरिया इस सैन्य अभ्यास को अपने देश पर संभावित हमले की रिहर्सल मानता है। लेकिन किम जोंग उन की बहन और उत्तर कोरिया की वरिष्ठ अधिकारी किम यो जोंग ने ट्रंप के इस फैसले को भी खारिज कर दिया था।

रूस और चीन से बढ़ती नजदीकी भी अहम : विशेषज्ञों का मानना है कि उत्तर कोरिया अब अपने बढ़ते परमाणु कार्यक्रम और रूस तथा चीन के साथ मजबूत होते संबंधों के कारण पहले से ज्यादा आत्मविश्वास में है। जानकारों के मुताबिक, किम जोंग उन संभावित अमेरिका-उत्तर कोरिया बातचीत में अमेरिका से ज्यादा रियायतें हासिल करना चाहते हैं। किम जोंग उन ने इस साल की शुरुआत में कहा था कि अगर अमेरिका उत्तर कोरिया के खिलाफ अपनी 'शत्रुतापूर्ण नीति' छोड़ देता है और उत्तर कोरिया को परमाणु शक्ति के रूप में उसकी स्थिति का सम्मान करता है।

हूती विद्रोहियों ने बाब अल मंदब जल डमरू मध्य में मायून द्वीप पर कब्जा किया

अदन, एजेंसी। यमन के हूती विद्रोहियों ने शुक्रवार को बाब अल मंदब जलडमरूमध्य में रणनीतिक रूप से अहम मायून द्वीप पर कब्जा कर लिया। सिन्हुआ समाचार एजेंसी को सरकारी अधिकारी ने बताया कि सैनिकों के पीछे हटने के बाद हूती विद्रोहियों ने कार्रवाई की। नाम नहीं बताने की शर्त पर अधिकारी ने बताया कि हूती विद्रोही शुक्रवार तड़के कई नावों से द्वीप पर पहुंचे और बिना किसी सैन्य प्रतिरोध के उस पर कब्जा कर लिया। हूतियों ने पास के तट पर बख्तरबंद गाड़ियां और अन्य सैन्य उपकरण भी तैनात किए। अधिकारी ने बताया कि गुरुवार को लाल सागर के बंदरगाह शहर मोचा पर हूती विद्रोहियों के कब्जे के बाद सरकारी सैनिकों के दक्षिण की ओर पीछे हटने पर हूती विद्रोही जलडमरूमध्य के पास धुबाब जिले में भी आगे बढ़ गई है। सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, मायून (जिसे पेरिम भी कहा जाता है) बाब अल मंदब के भीतर स्थित है और संकरे जलमार्ग को दो शिपिंग चैनलों में विभाजित करता है। यमन के पश्चिमी तट पर हूती विद्रोहियों की हालिया बढ़त के बाद इस पर कब्जा करने से समूह को लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्ग पर नजर रखने वाली प्रमुख जगहों पर नियंत्रण मिल गया है। हूती विद्रोहियों ने भीषण लड़ाई के बाद मोचा पर कब्जा किया और इसके रणनीतिक बंदरगाह, हवाई अड्डे और प्रमुख सरकारी सुविधाओं पर नियंत्रण कर लिया। पिछले सप्ताह एक बड़ा हमला शुरू करने के बाद से उन्होंने यमन के पश्चिमी तट पर तेजी से इलाकों पर कब्जा किया है। यमन और हॉर्न ऑफ अफ्रीका के बीच स्थित बाब अल मंदब अंतरराष्ट्रीय व्यापार और ऊर्जा शिपमेंट के लिए एक महत्वपूर्ण गलियारा है, जो लाल सागर और स्वेज नहर को अदन की खाड़ी और अरब सागर से जोड़ता है। यमन के लिए संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत हंस ग्रंडबर्ग ने गुरुवार को चेतावनी दी कि यमन में फिर से शुरू हुई लड़ाई से देश के एक बड़े और अनसुलझे क्षेत्रीय टकराव में घिरने का खतरा है, जिसके वैश्विक परिणाम हो सकते हैं। पिछले 24 घंटों में, यमन में कई मोर्चों पर लड़ाई तेज हो गई है, खासकर रणनीतिक पश्चिमी तट पर। ग्रंडबर्ग ने सुरक्षा परिषद को एक ब्रीफिंग में बताया कि हूती विद्रोहियों ने मोखा सहित कई जगहों पर बड़ा हमला किया। मोखा बंदरगाह शहर बाब अल मंदब से लगभग 75 किमी दूर स्थित है। बाब अल मंदब वह महत्वपूर्ण बिंदु है जो लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ता है उन्होंने कहा, 'उन्होंने मोखा पर नियंत्रण कर लिया है, जिससे दुनिया के सबसे अहम जलडमरूमध्य में से एक के रास्तों पर उनकी सीधी मौजूदगी हो गई है।

यूक्रेन पर रूस के हमले जारी, शॉपिंग मॉल के पास ड्रोन से किया हमला, पांच की मौत

कीव , एजेंसी। यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा ने बताया कि रूस ने पावलोहराद में ड्रोन हमले कर कम से कम पांच लोगों की जान ले ली और 67 लोग घायल हो गए। यूक्रेनी मंत्री ने कहा कि शॉपिंग मॉल के पास दिनदहाड़े नागरिकों को निशाना बनाया गया, जो नागरिकों के खिलाफ जानबूझकर किया गया आतंक है। यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पोस्ट पर लिखा, ''रूस ने पावलोहराद में ड्रोन हमले करके पांच लोगों की जान ले ली। हमलों में 67 लोग घायल हुए हैं। दिनदहाड़े ड्रोन हमलों में शॉपिंग मॉल के पास मौजूद आम नागरिकों को निशाना बनाया गया। इसे नागरिकों के खिलाफ जानबूझकर किया गया आतंक फैलाने वाला हमला बताया गया है।'' सिबिहा ने कहा कि रूस लगातार उन जगहों पर हमले कर रहा है, जहां उसे पता है कि लोग अपनी रोजमर्रा की जिंदगी के कामों में व्यस्त होंगे। इसका मकसद ज्यादा से ज्यादा लोगों को नुकसान पहुंचाना, डर फैलाना और यूक्रेनी समाज पर दबाव बनाना है। उन्होंने बताया कि पूरे यूक्रेन में हवाई हमलों की चेतावनियां लगातार जारी हैं। रूस लगातार बड़ी संख्या में ड्रोन लॉन्च कर रहा है और कुछ मामलों में तो सीधे उत्पादन केंद्रों से ही उन्हें भेजा जा रहा है।

उन्होंने आरोप लगाया कि मॉस्को ऐसा इसलिए कर पा रहा है क्योंकि उसके पास अभी भी मिसाइलें, ड्रोन, उनके पुर्जे, पर्याप्त धन और बिना किसी डर के कार्रवाई करने की क्षमता मौजूद है। सिबिहा ने इस रणनीति को दबाव बनाने की नीति बताया। रूस का मानना है कि नागरिक क्षेत्रों पर लगातार हमले करके यूक्रेन के लोगों को थकाया जा सकता है और यूक्रेन को समझौते करने के लिए मजबूर किया जा सकता है। सिबिहा ने कहा कि यूक्रेन को तुरंत अतिरिक्त एयर डिफेंस सिस्टम और उन्हें चलाने के लिए जरूरी इंटरसेप्टर मिसाइलों की जरूरत है। साथ ही रूस के हथियार निर्माण उद्योग और उसे चलाने वाली आपूर्ति श्रृंखलाओं (सप्लाई चेन) पर और सख्त प्रतिबंध लगाए जाने चाहिए।

बघाई ने पीट हेगसेथ के बयान पर बोला हमला, कहा- 9/11 की आड़ में ईरान के खिलाफ जंग को सही ठहरा रहा अमेरिका

वाशिंगटन , एजेंसी। ईरानी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने वाशिंगटन के रुख पर कड़ा एतराज जताते हुए अमेरिका पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिकी सरकार 9/11 वर्ल्ड ट्रेड सेंटर हमलों की 25वीं बरसी का इस्तेमाल ईरान के खिलाफ एक 'लापरवाह और गैर-कानूनी युद्ध' को सही ठहराने के लिए कर रही है। बघाई ने अमेरिकी युद्ध सचिव पीट हेगसेथ के उस बयान की कड़ी निंदा की, जो उन्होंने 9/11 के एक स्मृति समारोह के दौरान दिया था। ईरानी प्रवक्ता ने अमेरिकी विदेश नीति के बुनियादी अंतर्विरोधों पर सवाल उठाते हुए आतंकवाद की परिभाषा तय करने के वाशिंगटन के 'अकेले अधिकार' को खारिज कर दिया।

इस्माइल बघाई ने क्या कहा: बघाई ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि 9/11

हमले के जिम्मेदार लोग ईरानी नहीं थे। उन्होंने अमेरिका की आतंकवाद के खिलाफ नीति पर सवाल उठाते हुए कहा कि अमेरिका खुद दूसरे देशों में सैन्य कार्रवाई करता है, अधिकारियों की हत्या करता है और आम नागरिकों को निशाना बनाता है, फिर भी आतंकवाद की परिभाषा तय करने का अधिकार अपने पास रखता है। ऐतिहासिक दावों का खंडन करते हुए बघाई ने स्पष्ट किया कि 2001 के हमलों में ईरान की कोई भूमिका नहीं थी। उन्होंने कहा कि 9/11 के हमलावर ईरानी नहीं थे, बल्कि ये वही लोग थे जिन्हें पिछले दशकों में खुद अमेरिका ने हथियार दिए, संगठित किया और तैयार किया था।

बघाई ने कहा कि 9/11 के बाद अमेरिका के तथाकथित 'आतंक के खिलाफ युद्ध' ने इराक और अफगानिस्तान में केवल दशकों का कब्जा, विनाश और निर्दोष नागरिकों की मौतें दीं। उन्होंने हेगसेथ के इस रुख को पूरी तरह बेतुका बताते हुए कहा कि किसी संप्रभु देश के अधिकारियों की हत्या करने और महिलाओं व बच्चों सहित आम नागरिकों को निशाना बनाने वाले आपराधिक युद्ध को आतंकवाद-निरोध के नाम पर नैतिक रूप से सही नहीं ठहराया जा सकता। बघाई ने अमेरिकी नीति का मजाक उड़ाने के लिए फिल्म 'डेस्पिकेबल मी' का लोकप्रिय 'ग्रूज प्लान' मीम भी साझा किया। दूसरी तरफ, अमेरिकी युद्ध सचिव पीट हेगसेथ ने अपने आक्रामक भाषण में ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई को अमेरिका के आतंकवाद-विरोधी अभियान से जोड़ा था। हेगसेथ ने दावा किया कि पिछले छह महीनों में अमेरिकी सैनिकों ने आतंकवाद के सबसे बड़े प्रायोजक को तहस-नहस कर दिया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने ईरानी नेताओं को मार गिराया है, उनकी वायुसेना को तबाह किया है और उनकी नौसेना व तेल टैंकरों को समुद्र में डुबो दिया है। हेगसेथ ने जोर देकर कहा कि अमेरिका जलडमरूमध्य पर नियंत्रण रखता है, आर्थिक दबाव बढ़ा रहा है और ईरान को कभी परमाणु हथियार नहीं बनाने देगा। उन्होंने बाइबिल के वचनों और फ्लाइट 93 के यात्री टॉड बीमर के प्रसिद्ध शब्दों 'लेट्स रोल' का हवाला देते हुए इस लड़ाई को खत्म करने का संकल्प जताया।

अमेरिका: अलास्का के ठंडे समुद्र में पलटी नाव पर दो दिन चिपका रहा 15 साल का किशोर; कैसे बची जान? भाई की मौत

अलास्का, एजेंसी। अलास्का के ठंडे बेरिंग सागर में 15 साल का एक लड़का करीब दो दिन तक पलटी हुई छोटी नाव के ऊपर चिपका रहा। बाद में मछली पकड़ने वाली एक नाव ने उसे बचा लिया। उसके साथ मछली पकड़ने गए बड़े भाई और एक रिश्तेदार की जान नहीं बच सकी।

किशोर ने बचाव दल के एक सदस्य को बताया कि वह और उसका रिश्तेदार कुछ समय तक पलटी नाव को पकड़े रहे। इसके बाद उसका रिश्तेदार पानी में फिसलकर गिर गया। बाद में किशोर के भाई और रिश्तेदार दोनों के शव बरामद कर लिए गए।

उसे रूस के ज्यादा करीब स्थित सेंट लॉरेंस द्वीप के पास समुद्र से

बचाया गया। यह अलास्का का एक दूरदराज द्वीप है। यह अमेरिका की मुख्य भूमि के मुकाबले रूस के ज्यादा करीब है। मछली पकड़ने वाली नाव द नॉर्थवेस्ट एक्सप्लोरर के कप्तान एडम व्हाइट ने बताया कि किशोर अंधेरे में भी नाव से चिपका रहा। समुद्र के पानी का तापमान करीब 10 डिग्री सेल्सियस था। कप्तान ने उसकी हिम्मत की तारीफ करते हुए कहा कि वह बहुत मजबूत बच्चा है। उन्होंने बताया कि किशोर के दांत ठंड से कांप रहे थे। उसने बताया कि उसका भाई अभी भी नाव के नीचे है। उसने यह भी बताया कि बचाव से पिछली रात उसका रिश्तेदार पानी में गिर गया था। अमेरिकी तटरक्षक बल ने सोमवार सुबह तलाश शुरू की। परिवार के लोगों ने रविवार रात तीनों के लापता होने की सूचना दी थी। तीनों शुक्रवार को सेंट लॉरेंस द्वीप के सावूंगा गांव से निकले थे। उन्हें रविवार सुबह वापस लौटना था। सावूंगा गांव में हैलिबट मछली पकड़ना जीवन और संस्कृति का अहम हिस्सा है। गांव में करीब 800 लोग रहते हैं। यहां रोजगार के मौके भी कम हैं। किशोर की मौसी कोलन वॉकर ने बताया कि लोग अक्सर पकड़ी गई मछलियां परिवार और पड़ोसियों के साथ बांटते हैं।

नेपाल भीषण बाढ़ और प्राकृतिक आपदा: जलवायु परिवर्तन से क्षति के मुआवजे का उठता सवाल

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल की धरती पर हाल ही में आई भीषण बाढ़ और प्राकृतिक आपदा ने पूरी दुनिया को झकझोर कर रख दिया है. जब एक हिमालयी देश अपनी उजड़ी हुई बस्तियों, टूटे हुए पुलों और तबाह हुई अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने मुआवजे की मांग रखता है, तो यह केवल एक देश की पुकार नहीं रह जाती, बल्कि यह ग्लोबल साउथ की उस लंबी फेहरिस्त की आवाज बन जाती है जो बिना किसी गलती के ग्लोबल वार्मिंग की सबसे भारी कीमत चुका रहा है. नेपाल जैसे देशों ने कभी बड़े पैमाने पर कार्बन का उत्सर्जन नहीं किया, उनके यहां उद्योग-धंधे वह प्रदूषण नहीं फैलाते जो पश्चिमी या विकसित देशों में दशकों से चले आ रहे हैं, फिर भी प्रकृति के इस कहर का सबसे बड़ा दंश उन्हें ही झेलना पड़ रहा है. नेपाल की यह मुखर मांग अब पूरी दुनिया के सामने यह सवाल खड़ा करती है कि आखिर इस तबाही का जिम्मेदार कौन है और क्या पीड़ित देशों को उनके नुकसान का हक मिलना चाहिए या नहीं. जलवायु परिवर्तन का संकट अब भविष्य की कोई काल्पनिक चेतावनी नहीं, बल्कि हमारे वर्तमान का एक खौफनाक सच बन चुका है. वैज्ञानिक आंकड़े बताते हैं कि पृथ्वी का औसत तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तर से लगातार ऊपर जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप महासागर गर्म हो रहे हैं, मौसम का चक्र पूरी तरह बिगड़ चुका है और अति-वृष्टि, सूखा, चक्रवात तथा बादलों के फटने की घटनाएं आम हो गई हैं. दुनिया भर में जलवायु आपदाओं के कारण हर साल सैकड़ों अरब डॉलर का आर्थिक नुकसान हो रहा है. और विकासशील देशों में यह नुकसान उनकी कुल राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा निगल जाता है. विश्व बैंक और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टें बताती हैं कि यदि तुरंत ठोस कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले दशकों में करोड़ों लोगों को अपने घर-बार छोड़कर जलवायु शरणार्थी बनने पर मजबूर होना पड़ेगा. यह केवल आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि इसमें उजड़ते हुए खेत, टूटते हुए मकान और उन अनगिनत इंसानों के आंसू हैं जिन्होंने अपनी मेहनत से अपनी दुनिया बनाई थी और एक झटके में सबकुछ खो दिया. इस पूरे संकट के केंद्र में एक बहुत बड़ा पाखंड छिपा हुआ है, जिसे अब और नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. ऐतिहासिक रूप से जिन विकसित देशों ने अपने कारखानों और आधुनिक जीवनशैली से इस धरती के पर्यावरण को सबसे ज्यादा प्रदूषित किया, वे आज जब विकासशील देशों को मदद देने की बात आती है, तो अपने हाथ पीछे खींच लेते हैं. वे इसे दान या सहायता का नाम देते हैं, जबकि पर्यावरण और अर्थशास्त्र के जानकारों के अनुसार यह किसी भी सूरत में दान नहीं, बल्कि ऐतिहासिक कर्ज और मुआवजे की अदायगी है. जिन देशों ने सदियों तक पर्यावरण की कीमत पर अपनी तिजोरियां भरी हैं, उनकी नैतिक और विधिक जिम्मेदारी बनती है कि वे उन देशों को आर्थिक संबल दें जो उनके किए गए प्रदूषण की भारी कीमत चुका रहे हैं. एशिया और अफ्रीका के कई ऐसे देश हैं जो लगातार सूखे, चक्रवातों और बाढ़ की चपेट में आ रहे हैं, उनकी कृषि व्यवस्था बर्बाद हो रही है।

अमेरिकी मीडिया की नजर में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में बदलता समीकरण

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के प्रमुख अखबारों ने नई दिल्ली में हो रहे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन को बदलते वैश्विक हालात की झलक के तौर पर देखा है। ये हालात तनावपूर्ण गठबंधनों, क्षेत्रीय युद्धों और वॉशिंगटन व बीजिंग के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा से तय हो रहे हैं। 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' ने एक खबर में कहा कि इस शिखर सम्मेलन में सबसे अहम सवाल यह है कि क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी या चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग में से कौन विकासशील दुनिया की अधिक प्रभावशाली आवाज बनकर उभरेगा। चीन ब्रिक्स को अमेरिकी ताकत को चुनौती देने के एक प्लेटफॉर्म के तौर पर देखता है। वहीं, भारत चाहता है कि यह ग्रुप इतना बड़ा और खुला रहे कि देशों को अलग-अलग गुटों में से किसी एक को चुनने के लिए मजबूर न होना पड़े। अखबार ने कहा कि युद्ध, ऊर्जा की बढ़ती कीमतें, अमेरिकी टैरिफ और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर चिंताएं देशों को वॉशिंगटन और बीजिंग के साथ अपने रिश्तों पर फिर से सोचने के लिए मजबूर कर रही हैं। वॉशिंगटन में स्टिमसन सेंटर के चीन प्रोग्राम की डायरेक्टर युन सन ने 'टाइम्स' को बताया, 'भारत को लेकर चीन की मुख्य चिंता हमेशा से भारत का अमेरिका के साथ झुकाव रही है। इसलिए बीजिंग निश्चित रूप से दिल्ली के साथ अपने रिश्तों को बेहतर बनाने का मौका नहीं गंवाना चाहेगा।

चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग का यह दौरा सात साल में भारत का उनका पहला दौरा है। यह दौरा 2020 में सीमा पर हुई जानलेवा झड़प के बाद रिश्तों में आई लंबी खटास और 2024 में शुरू हुई सावधानी भरी कूटनीतिक सुधार की प्रक्रिया के बाद हो रहा है। शी 24 सितंबर को व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मिलने वाले हैं। यह मुलाकात नई दिल्ली समिट को और भी अहम बनाती है, क्योंकि चीनी नेता अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ बेहद अहम बातचीत की तैयारी कर रहे हैं।

वॉल स्ट्रीट जर्नल ने कहा कि अमेरिका के साथ भारत और चीन के रिश्तों में अनिश्चितता ने इन दोनों परमाणु-हथियार वाले पड़ोसी देशों के लिए तनाव कम करने का मौका दिया है। तृप्ति लाहिड़ी और ऑस्टिन रैमजी की रिपोर्ट में कहा गया है कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के दौरान भारत-अमेरिका संबंधों में गिरावट आई थी, जिसकी वजह नई दिल्ली द्वारा रूसी तेल की खरीद जैसे मुद्दे थे। नई दिल्ली की जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी में चीनी अध्ययन के प्रोफेसर श्रीकांत कोंडापल्ली ने जर्नल को बताया, 'भारत स्थिति को फिर से संतुलित करने की कोशिश कर रहा है। अखबार ने कहा कि भारत-चीन संबंधों में कोई भी सुधार सीमा विवाद के अनसुलझे रहने, पाकिस्तान के साथ चीन के करीबी रिश्तों और हिंद महासागर में सुरक्षा प्रतिस्पर्धा की वजह से सीमित है। सुन ने जर्नल को बताया, 'चीनी पक्ष भी देख रहा है कि भारत सही समय का इंतजार कर रहा है और बेहतर विकल्पों पर काम कर रहा है, जो भविष्य में सामने आ सकते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि इससे चीन-भारत संबंधों में मौजूदा सुधार की सतही प्रकृति और बढ़ जाती है। वाशिंगटन पोस्ट ने एसोसिएटेड प्रेस के पत्रकारों एजाज हुसैन और शेख सालिक की रिपोर्टें प्रकाशित कीं, जिनमें इस शिखर सम्मेलन को भारत के लिए एक मुश्किल संतुलन बनाने वाली कवायद बताया गया। रिपोर्टों में कहा गया कि बैठक में शामिल होने वाले नेताओं में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान और शी शामिल थे। पीएम मोदी ने शिखर सम्मेलन से पहले पुतिन और पेजेश्कियान के साथ अलग-अलग बातचीत की। वाशिंगटन 'पोस्ट' में छपी एपी की रिपोर्ट के अनुसार, इस बढ़े हुए ग्रुप के 11 सदस्य ग्लोबल ऑर्डर में अधिक प्रभाव चाहते हैं, लेकिन उनके राजनीतिक, आर्थिक और विदेश नीति से जुड़े हित अलग-अलग हैं। इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप के सीनियर एनालिस्ट प्रवीण डोंथी ने एपी को बताया, 'ग्लोबल साउथ कोई एक जैसा ग्रुप नहीं है। इसलिए, इस ग्रुप के लिए इन झगड़ों को संभालना और उनमें मध्यस्थता करना मुश्किल होगा। ' रिपोर्ट में कहा गया है कि यूक्रेन और मिडिल ईस्ट में चल रहे युद्ध इन मतभेदों को सामने ला सकते हैं। भारत के रूस और ईरान के साथ पुराने संबंध हैं, जबकि वह अमेरिका, यूरोप, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ भी अपनी साझेदारी बढ़ा रहा है।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

नवजात को निजी अस्पताल ने बनाया बंधक, पुलिस ने छुड़ाया

गोरखपुर (एजेंसी)। बीआरडी मेडिकल कॉलेज में उपचार के लिए रेफर की गई एक नवजात बच्ची को एंबुलेंस चालक ने धोखे से फातिमा बाईपास स्थित एक निजी अस्पताल पहुंचा दिया। स्वजनों का आरोप है कि निजी अस्पताल ने पहले 96 हजार रुपये वसूले और फिर बच्ची को बंधक बनाकर डिस्चार्ज के लिए 90 हजार रुपये और मांगे। पुलिस के हस्तक्षेप के बाद अतिरिक्त 30 हजार रुपये लेकर बच्ची को छोड़ा गया।
कुशीनगर के कसया स्थित वरदान अस्पताल में 29 अगस्त को जन्मी इस बच्ची को सांस लेने में दिक्कत थी। प्रारंभिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने 5 सितंबर को उसे बीआरडी मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया था। बच्ची के बाबा अर्जुन कुशवाहा ने बताया कि इसी दौरान एक निजी एंबुलेंस चालक ने उन्हें गुमराह किया और बेहतर इलाज का झांसा देकर शाहपुर के फातिमा बाईपास स्थित एकता मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल में भर्ती करा दिया। स्वजनों के मुताबिक, 5 सितंबर से बच्ची का उपचार इसी अस्पताल में चल रहा था। इस दौरान इलाज और दवा के नाम पर उनसे 96 हजार रुपये जमा करा लिए गए। जब उन्होंने बच्ची को डिस्चार्ज कर बीआरडी ले जाने का अनुरोध किया, तो अस्पताल प्रबंधन ने 90 हजार रुपये और जमा करने को कहा। रकम न देने पर बच्ची को बंधक बनाए रखा गया। परेशान स्वजनों ने डायल-112 पर सूचना दी। पुलिस के हस्तक्षेप के बाद शाहपुर थाने में दोनों पक्षों को बुलाया गया। शाहपुर थानाध्यक्ष ने बताया कि समझाने-बुझाने के बाद 30 हजार रुपये और लेकर नवजात को डिस्चार्ज कराया गया। हालांकि, अस्पताल संचालक मैनुद्दीन ने आरोपों को गलत बताते हुए कहा कि केवल उपचार में लगे खर्च की ही धनराशि ली गई है।

निखिल कोचिंग संचालक ने मांगी सुरक्षा, कहा- खान सर से खतरा

पटना (एजेंसी)। बिहार की राजधानी पटना के मशहूर कोचिंग शिक्षक खान सर उर्फ फैजल खान एक बार फिर गंभीर विवादों में घिरे नजर आ रहे हैं। पहले रोशन आनंद के साथ उनके विवाद ने सुर्खियां बटोरी थीं, और अब करीब एक महीने पहले उत्तर प्रदेश की एक लड़की ने खान सर के खिलाफ पटना के पीरबहोर थाने में सुरक्षा को लेकर एक आवेदन दिया था, जिससे नया विवाद खड़ा हो गया है। इस मामले में निखिल कोचिंग संस्थान के डायरेक्टर निखिल कुमार ने उस लड़की का खुलकर समर्थन किया है, जिसके बाद उन्होंने खान सर के कथित गुर्गों द्वारा धमकी दिए जाने का आरोप लगाया है।निखिल कुमार ने इस संबंध में पटना सिटी एसडीपीओ और पटना एसएसपी को एक लिखित आवेदन दिया है। आवेदन में उन्होंने अपनी जान को खतरा बताते हुए कहा है कि उनके गुर्गों द्वारा उनकी रेकी (जासूसी) की जा रही है और उन्हें जान से मारने की धमकी मिल रही है।

पश्चिम बंगाल में बिना पंजीयन कर चल रहे 252 मदरसों को बंद करने का नोटिस

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में बिना पंजीकरण या मान्यता के संचालित हो रहे मदरसों पर कार्रवाई की तैयारी शुरू हो गई है। राज्य के 22 जिलों और कोलकाता में कराए गए सर्वेक्षण में 2396 मदरसे ऐसे पाए गए हैं, जिनके पास सरकारी पंजीकरण या किसी मान्यता प्राप्त सरकारी बोर्ड की मंजूरी नहीं है। अल्पसंख्यक मामलों और मदरसा शिक्षा विभाग की ओर से कराए गए इस सर्वेक्षण के आधार पर पहले चरण में 252 मदरसों को तत्काल बंद करने का नोटिस जारी किया गया है। मीडिया रिपोर्ट में अधिकारियों के मुताबिक सर्वेक्षण में कुल 2,132 मदरसे ऐसे पाए गए जो जरुरी पंजीकरण या मान्यता के साथ संचालित हो रहे हैं। वहीं, जिला प्रशासन की रिपोर्ट में 2,396 संस्थानों के पास जरूरी पंजीकरण या सरकारी बोर्ड से संबद्धता नहीं होने की जानकारी सामने आई है। सत्यापन के बाद मदरसा शिक्षा निदेशालय ने 252 संस्थानों को संचालन तत्काल बंद करने का निर्देश दिया है। इन नोटिस की प्रतियां संबंधित जिलाधिकारियों को भी भेजी गई हैं। जिलाधिकारियों को यह तय करने के लिए कहा गया है कि संबंधित संस्थानों का संचालन बंद हो। इसके अलावा 100 अन्य मदरसों को कारण बताओ नोटिस जारी किए गए हैं। यदि वे अपनी वैधता साबित करने में विफल रहते हैं तो कानून के तहत उनके खिलाफ भी बंद करने की कार्रवाई की जा सकती है।

सागर शराब कांड में 2 की और मौत, मृतक संख्या 36 हुई

सागर (एजेंसी)। सागर जिले में जहरीली शराब पीने से हुई मौतों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। कांड में उपचार के दौरान दो और लोगों की मौत हो गई। इसके साथ ही जहरीली शराब से जान गंवाने वालों की संख्या बढ़कर 36 हो गई है। घटना के बाद प्रशासन और पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है। पुलिस अवैध शराब के निर्माण और बिक्री से जुड़े लोगों की तलाश में जुटी है। वहीं, अस्पतालों में भर्ती अन्य प्रभावित लोगों के उपचार पर भी निगरानी रखी जा रही है। इस घटना ने अवैध शराब के कारोबार और प्रशासनिक निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय लोगों ने दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई और प्रभावित परिवारों को तत्काल सहायता देने की मांग की है।

आतंकवाद से लेकर वैश्विक सुधार तक ब्रिक्स देशों का साझा रुख

ब्रिक्स घोषणापत्र में भारत की कूटनीतिक जीत

नई दिल्ली, एजेंसी।
यहां आयोजित 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में नई दिल्ली घोषणापत्र जारी किया गया, जिसने आतंकवाद, वैश्विक शासन सुधार और मध्य-पूर्व संकट जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर सदस्य देशों का साझा रुख प्रस्तुत किया। इस घोषणापत्र को भारत की कूटनीतिक सफलता के रूप में देखा जा रहा है, खासकर तब जब विभिन्न वैश्विक चुनौतियों पर साझा सहमति बनाना कठिन माना जा रहा था।घोषणापत्र में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में अप्रैल 2025 को हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की गई, जिसमें 26 नागरिकों की मौत हुई थी। ब्रिक्स ने देश-समर्थित सीमा पार आतंकवाद, इसकी फंडिंग और आतंकियों के सुरक्षित ठिकानों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर जोर दिया। चीन और रूस जैसे देशों की मौजूदगी में किसी विशिष्ट आतंकी घटना का नाम शामिल करना और सीमा पार आतंकवाद पर सीधा रुख अपनाना भारत के लिए एक बड़ी कूटनीतिक जीत मानी जा रही है, जो आतंकवाद के मुद्दे पर दोहरे मानदंडों को अस्वीकार करता है।संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में सुधार की मांग को दोहराते हुए ब्रिक्स देशों ने इसे अधिक लोकतांत्रिक, प्रतिनिधि और प्रभावी बनाने पर जोर दिया। चीन और रूस ने विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र

में भारत और ब्राजील की बड़ी भूमिका और आकांक्षाओं के प्रति अपने समर्थन को दोहराया। चीन का पहले यूएनएससी में भारत की स्थायी सदस्यता का विरोध करना और अब इस पर सहमति जताना, भारत की दीर्घकालिक कोशिशों को रणनीतिक बल प्रदान करता है। गाजा संकट पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए घोषणापत्र में बिना बाधा मानवीय सहायता पहुंचाने और स्थायी युद्धविराम की मांग की गई। घोषणापत्र में एकतरफा टैरिफ, व्यापार बाधाओं और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की मंजूरी के बिना लगाए जाने वाले आर्थिक प्रतिबंधों का विरोध किया गया। यूरोपीय संघ के कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म जैसे ग्रीन-टैक्स उपायों को संरक्षणवाद करार दिया गया। इसके अतिरिक्त, ब्रिक्स ने विश्व व्यापार संगठन में तत्काल सुधार और उसके ठप पड़े विवाद निपटान तंत्र की बहाली की मांग की, जो नियम-आधारित वैश्विक व्यापार व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। सदस्य देशों ने आपस में स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने और भुगतान प्रणालियों के बीच इंटर-कनेक्शन विकसित करने पर सहमति जताई, जिससे अमेरिकी डॉलर पर वैश्विक निर्भरता कम होगी। भारत के गुजरात स्थित गिफ्ट सिटी आईएफएससी में ब्रिक्स रिस्क लैब स्थापित करने के प्रस्ताव का स्वागत किया गया, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) शासन पर भारत की पहल एआई इंपैक्ट समिट की सराहना की गई, जो भारत को वैश्विक मंच पर एक मजबूत स्थिति में रखता है। घोषणापत्र में शांतिपूर्ण परमाणु ठिकानों पर हमलों को अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बताया गया और ऊर्जा सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया गया।

बिहार में बाढ़ का खतरा बरकरार, पुनपुन में वृद्धि चिंताजनक

- कई स्थानों पर नदियां खतरे के निशान से ऊपर, पटना में कुछ घाटों पर जलस्तर घटा

पटना(एजेंसी)। बिहार में शनिवार शाम को गंगा, कोसी और अन्य नदियों का जलस्तर विभिन्न स्थानों पर अभी भी खतरे के निशान से ऊपर बना हुआ है, हालांकि अधिकांश जगहों पर यह या तो स्थिर है या उसमें गिरावट दर्ज की जा रही है। चिंता की बात यह है कि पुनपुन नदी के जलस्तर में बढ़ोतरी हो रही है। जल संसाधन विभाग के बाढ़ प्रबंधन सुधार सहायता केंद्र, पटना द्वारा 12 सितंबर रात 9 बजे तक जारी आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। गंगा नदी बक्सर में चेतावनी स्तर से 0.43 मीटर ऊपर 59.75 मीटर पर स्थिर बह रही है। पटना जिले के दीघाघाट में जलस्तर खतरे के निशान से 0.44 मीटर ऊपर 50.89 मीटर पर स्थिर रहा, जबकि गांधीघाट में यह 1.13 मीटर ऊपर 49.73 मीटर पर घटने का रुख दिखा रहा है। बांकाघाट में भी गंगा खतरे के निशान से 0.69 मीटर ऊपर स्थिर बनी हुई है। पंडारक और हाथीदह में गंगा क्रमशः चेतावनी और खतरे के निशान से ऊपर स्थिर है, हाथीदह में यह 1.18 मीटर ऊपर दर्ज की गई। आगे बढ़ते हुए, मुंगेर, सुल्तानगंज, भागलपुर और अजगैनाबाद में गंगा का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर रहने के बावजूद उसमें गिरावट दर्ज की गई है। सुल्तानगंज में यह 1.83 मीटर और अजगैनाबाद में 1.20 मीटर ऊपर है। वहीं, कहलगांव और साहेबगंज में नदी अभी भी खतरे के निशान से काफी ऊपर (क्रमशः 1.60 मीटर और 1.43 मीटर) स्थिर है। इन सबके बीच, पुनपुन नदी के जलस्तर में हो रही वृद्धि ने स्थानीय प्रशासन और निवासियों की चिंता बढ़ा दी है, जिस पर लगातार नजर रखी जा रही है।

ब्रिक्स में विशेषज्ञों ने कहा- भारत बना वैश्विक डिजिटल और एआई का केंद्र

नई दिल्ली, एजेंसी।
ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के पहले दिन विभिन्न देशों के विशेषज्ञों ने भारत की डिजिटल तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के क्षेत्र में बढ़ती वैश्विक भूमिका की जमकर सराहना की। विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया कि भारत तेजी से एक वैश्विक एआई केंद्र के रूप में उभर रहा है, जिसके चलते ब्रिक्स देशों के बीच तकनीकी साझेदारी, नवाचार और ज्ञान के आदान-प्रदान की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने भारत के विशिष्ट डिजिटल भुगतान मॉडल, विशेषकर यूपीआई, को भी विश्व के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बताया, जो समावेशी विकास और वित्तीय समावेशन का एक प्रतीक बन गया है। इस अवसर पर मिस्र के एआई विशेषज्ञ अहमद गमाल ने ब्रिक्स को उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए तकनीकी सहयोग और नवाचार का एक साझा मंच बताया। उन्होंने भारत और मिस्र के बीच एआई क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की व्यापक संभावनाओं पर प्रकाश डाला, जिससे भविष्य में संयुक्त परियोजनाओं और ज्ञान साझा करने का मजबूत आधार तैयार हो सकता है। गमाल ने यह भी कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, विशेषकर एजेंटिक एआई का उभरता दौर, आने वाले वर्षों में रोजगार और काम करने के तरीकों में बड़े बदलाव लाएगा। उन्होंने सरकारों और उद्योगों को इस बदलती तकनीक को समझकर इसका जिम्मेदारी के साथ उपयोग करने की सलाह दी, ताकि विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाई जा सके और समाज को इसका अधिकतम लाभ मिल सके। उन्होंने ब्रिक्स सदस्य देशों को एक-दूसरे की विशेषज्ञता से सीखने और नवाचार को गति देने के लिए प्रोत्साहित किया।

सवालों पर बोले दीपके- मुझे सीएम समझ रहे हैं तो इस्तीफा दे देता हूं

बोले- ठेकेदारों को ब्लैकलिस्ट करने और अधिकारियों को निलंबित करने का रिकॉर्ड बनाऊंगा

बालाघाट, एजेंसी।
मध्य प्रदेश के बालाघाट पहुंचे कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संयोजक अभिजीत दीपके को शनिवार को एक अजीबोगरीब स्थिति का सामना करना पड़ा। आदिवासी इलाके में संक्रामक बीमारियों से बच्चों की मौतों के बाद स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लेने पहुंचे दीपके की कार को कुछ सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स ने घेर लिया और उनसे तीखे सवाल किए, जिसके बाद दीपके ने तंज कसते हुए कहा कि आप मुझे मुख्यमंत्री समझ रहे हैं तो मैं इस्तीफा दिए देता हूं।
वायरल हुए एक वीडियो में, एक महिला इन्फ्लुएंसर खुद को बताते हुए दीपके से पूछती सुनाई दे रही है कि क्या वह लाशों पर राजनीति करने आए हैं और इतनी देर से क्षेत्र का दौरा क्यों कर रहे हैं। वीडियो में दीपके यह कहते सुने गए कि क्षेत्र का दौरा करने में हुई देरी के लिए वह माफी मांगते

हैं। महिला को यह कहते भी सुना गया, यहां अच्छी सड़क बनी है, दिखाई नहीं दे रही क्या? इस बहस के बाद अभिजीत दीपके ने तंज कसते हुए कहा कि वह मध्य प्रदेश के राजभवन जाकर राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर अपना इस्तीफा दे देंगे। उनकी पार्टी, सीजेपी ने भी इसी तर्ज पर तंज कसते हुए कहा कि अभिजीत दीपके को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना चाहिए। सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने इस घटना पर टिप्पणी करते हुए कहा कि इन्फ्लुएंसर्स ऐसे प्रश्न कर रहे थे जैसे सूबे के मुख्यमंत्री से बात कर रहे हों।
दीपके बालाघाट में उन आदिवासी परिवारों से मिलने पहुंचे थे, जिन्होंने अपने बच्चे खो दिए थे। उन्होंने कहा कि प्रशासन द्वारा बताए जा रहे मौतों के आंकड़े वास्तविकता के मुकाबले बहुत कम हैं। दीपके ने दावा किया कि आदिवासियों के सड़क पर उतरने के बाद कम से कम 86 बच्चों को अस्पताल में भर्ती करवाया गया है, और अगर बच्चों को समय पर इलाज मिल जाता तो उनकी जान बचाई जा सकती थी। स्थानीय पत्रकारों ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि दूरदराज के गांव में बाहर से आए सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स का समूह मौजूद था। उन्होंने आशंका जताई कि दीपके के दौरे में बाधा डालने के लिए इन लोगों को किसी के कहने पर वहां भेजा गया था, हालांकि इस दावे की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है।

मोह में फंसकर पार्टी को नुकसान नहीं होने दूंगी: मायावती

-छोटे भतीजे ईशान से भी छीनी जिम्मेदारी

लखनऊ, एजेंसी।
बसपा सुप्रीमो मायावती ने अपने बड़े भतीजे आकाश आनंद को पार्टी से बाहर निकालने के बाद अब अपने छोटे भतीजे ईशान आनंद से भी पार्टी की जिम्मेदारी छीन ली है। ईशान को मायावती ने मात्र छह दिन पहले ही पार्टी का मुख्य सेक्टर कोआर्डिनेटर नियुक्त किया था। शनिवार को अपने एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट में मायावती ने यह भी प्रतिज्ञा ली कि वह भविष्य में अपने भाई आनंद कुमार के किसी भी बेटे को पार्टी में कोई जिम्मेदारी नहीं देंगी। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वह मोह (लगाव) में पड़कर पार्टी का किसी भी प्रकार से नुकसान नहीं होने देंगी।
मायावती ने 3 सितंबर को अपने बड़े भतीजे आकाश आनंद को राष्ट्रीय कोआर्डिनेटर के पद से हटाया था, जिसके बाद 7 सितंबर को छोटे भतीजे ईशान आनंद को मुख्य सेक्टर कोआर्डिनेटर बनाया था। हालांकि, यह जिम्मेदारी भी उनसे अब ले ली गई है। मायावती ने अपने एक्स पोस्ट में लिखा है

कि बसपा के मिशन की सफलता में किसी का भी रोड़ा बनना उन्हें स्वीकार्य नहीं है। उन्होंने कहा कि उनकी एकमात्र चिंता अपने बहुजन समाज परिवार के हित, कल्याण और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने की है। उन्होंने पार्टी संस्थापक कांशीराम की विचारधारा का अनुसरण करते हुए बताया कि उन्होंने अपने किसी भी सगे भाई-बहन और उनके परिवार के युवा सदस्यों, तथा नजदीकी रिश्तेदारों को पार्टी के कार्यों तक सीमित रखकर उन्हें सांसद, विधायक, मंत्री पद और अन्य किसी भी राजनीतिक लाभ के पदों से हमेशा दूर रखा है। बसपा सुप्रीमो ने अपनी अविवाहित स्थिति का हवाला देते हुए कहा कि उन्हें मजबूरी में अपने सबसे छोटे भाई आनंद कुमार को अपने साथ रखने की आवश्यकता पड़ी। वह उनकी देखभाल करने के साथ-साथ उनकी निगरानी में पार्टी की जिम्मेदारियों को निभा रहे हैं। लेकिन, मायावती ने स्पष्ट किया कि इसका लाभ अब उनके परिवार के लोग उठाएं, यह पार्टी और मूवमेंट के हित में सही नहीं होगा। उन्होंने अपनी अंतिम फैसला और प्रतिज्ञा बताते हुए कहा कि आनंद कुमार के किसी भी बेटे को बसपा में छोटे-बड़े पद पर रहकर राजनीति करने का मौका नहीं दिया जाएगा। यह निर्णय आकाश आनंद को पार्टी से हटाने के बाद आया है, जिसके लिए मायावती ने पहले उन्हें एक अल्टीमेटम दिया था। सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर उन्होंने लिखा था कि आकाश को तभी जिम्मेदारी दी जा सकती है, जब उनके ससुर अशोक सिद्धार्थ राजनीति से संन्यास ले लें। इस अल्टीमेटम के बाद गुरुवार सुबह आकाश आनंद के ससुर अशोक सिद्धार्थ ने अपने एक्स अकाउंट पर राजनीतिक और सामाजिक जीवन से संन्यास की घोषणा कर दी थी, साथ ही पार्टी के प्रति अपने समर्पण का पक्ष भी रखा था। हालांकि, इसके तुरंत बाद ही मायावती ने भी तगड़ा पलटवार किया और एक्स अकाउंट पर आकाश आनंद को पार्टी से बाहर किए जाने की घोषणा कर दी।

ब्रिक्स समिट के बीच राहुल गांधी की मलेशियाई पीएम इब्राहिम से मुलाकात

-प्रियंका गांधी भी रहीं मौजूद, दोनों नेताओं ने ब्रेकफास्ट पर की बातचीत

नई दिल्ली, एजेंसी।
नई दिल्ली,(ईएमएस)। दिल्ली में चल रहे 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के बीच कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी से रविवार को मलेशिया के प्रधानमंत्री दातो' सेरी अनवर बिन इब्राहिम ने मुलाकात की। इस दौरान कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा भी मौजूद रहीं। दोनों नेताओं की मुलाकात ब्रिक्स सम्मेलन से इतर हुई और उन्होंने साथ में नाश्ता किया। कांग्रेस पार्टी ने इस खास मुलाकात की तस्वीरें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा की हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और मलेशिया के पीएम अनवर इब्राहिम के बीच हुई इस मुलाकात को भारत और मलेशिया के बीच बढ़ते संबंधों के बीच अहम माना जा रहा है।

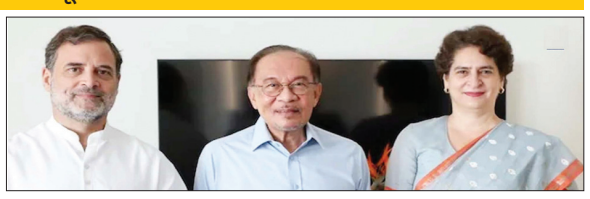

हालांकि, बैठक में किन विशेष मुद्दों पर चर्चा हुई, इसकी विस्तृत जानकारी सामने नहीं आई है। इससे एक दिन पहले मलेशियाई प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी द्विपक्षीय मुलाकात की थी। ब्रिक्स से इतर हुई इस बैठक में दोनों देशों के बीच सहयोग से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा हुई थी। प्रधानमंत्री मोदी ने बैठक के बाद कहा था कि भारत और मलेशिया के संबंध अब सेमीकंडक्टर, महत्वपूर्ण खनिज, स्वच्छ ऊर्जा, बुनियादी ढांचे और प्रतिभा की आवाजाही जैसे नए और महत्वाकांक्षी क्षेत्रों में आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा था कि दोनों देशों के बीच बढ़ता रक्षा सहयोग, द्विपक्षीय निवेश और लोगों के बीच मजबूत होते संबंध व्यापक रणनीतिक साझेदारी को नई गति दे रहे हैं। मोदी ने यह भी कहा था कि भारत और मलेशिया दोनों देशों के रिश्तों की पूरी क्षमता हासिल करने के लिए मिलकर काम जारी रखेंगे। वहीं, द्विपक्षीय बैठक की शुरुआत में अनवर इब्राहिम ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता की भी तारीफ की थी।

पांच राज्यों में आपराधिक मामलों वाले 1405 उम्मीदवारों को टिकट बांटे गए

-रिपोर्ट में खुलासा, राजनीतिक पार्टियों ने दागियों को टिकट देने की वजह नहीं बताई

नई दिल्ली,, एजेंसी।
एसोसिएशन फ्रॉम डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की रिपोर्ट में कहा गया है कि पांच राज्यों में आपराधिक मामलों वाले 1405 उम्मीदवारों को टिकट दिए गए। ये राज्य असम, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और पुडुचेरी हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि पार्टियों ने आपराधिक रिकॉर्ड वाले 176 उम्मीदवारों को टिकट देने की वजह नहीं बताई। एडीआर ने 51 पार्टियों के 3,539 उम्मीदवारों के रिकॉर्ड की जांच की। इनमें 1,405 उम्मीदवारों ने अपने हलफनामे में अपराधिक मामले घोषित किए थे। इनमें से 1,229 प्रत्याशियों के लिए पार्टियों ने सी-7 फॉर्म में जानकारी दी, जबकि 176 ने जानकारी नहीं दी। रिपोर्ट के मुताबिक पांचों राज्यों में तमिलनाडु में सबसे ज्यादा 72 उम्मीदवारों के सी-7 खुलासे नहीं मिले। एडीआर ने यहां 1,162 उम्मीदवारों का रिकॉर्ड देखा, जिनमें 473 ने आपराधिक मामले घोषित किए थे। इसके बाद पश्चिम बंगाल में 55, केरल में 27, पुडुचेरी में 12 और असम में 10 उम्मीदवारों की सी-7 जानकारी उपलब्ध नहीं थी। पुडुचेरी में 112 उम्मीदवारों में से 39 ने आपराधिक मामले घोषित किए थे। इनमें सिर्फ 12 उम्मीदवारों के टिकट देने का कारण उपलब्ध था।
एडीआर ने सिर्फ सी-7 जानकारी गायब होने पर ही सवाल नहीं उठाए, बल्कि पार्टियों की ओर से दिए गए कारणों की गुणवत्ता पर भी सवाल उठाए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक कई उम्मीदवारों के लिए लोकप्रियता, सामाजिक कार्य, अनुभव, योग्यता और अच्छी छवि जैसे एक ही तरह के कारण बताए गए। कई मामलों में भाषा भी एक जैसी थी यानी हर उम्मीदवार के आपराधिक रिकॉर्ड और योग्यता के आधार पर अलग कारण बताने के बजाय एक तय भाषा का इस्तेमाल किया गया।
एडीआर ने तमिलनाडु में बीजेपी, एआईएडीएमके, डीएमके और टीवीके के कुछ उम्मीदवारों के सी-7 फॉर्म में एक जैसे शब्दों का इस्तेमाल का जिक्र किया है। इससे सवाल उठता है कि क्या उम्मीदवारों के चयन की वजहों को अलग-अलग तैयार किया गया था या सिर्फ औपचारिकता पूरी की गई।
एडीआर ने कहा कि रिपोर्ट चुनाव से पहले और चुनाव के दौरान पार्टियों की वेबसाइट और सोशल मीडिया पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर तैयार की गई है। संभव है कि कुछ पार्टियों ने सी-7 की जानकारी किसी दूसरे जरिए से जारी की हो, जो एडीआर के रिकॉर्ड में नहीं आ पाई गई। इसलिए 191 मामलों में जानकारी नहीं मिलने को सीधे नियमों का उल्लंघन नहीं माना गया

है। इसे सार्वजनिक रिकॉर्ड में जानकारी उपलब्ध न होने के तौर पर देखा गया है।